मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • पूर्ण अंक २०५-२०६ • संयुक्त अंक अगस्त-सितम्बर-२०२४

Volume no. 18, Issue No. 205-206 Combined Issue August-September 2024

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001

गुजरात राज्य के मुख्य मंत्रीश्री भूपेन्द्रभाई पटेल प.पू. लालजी महाराजश्री को शुभेच्छा देते हुए ।

श्री नरनारायणदेव देश गादी के सभी संतो-भक्तो द्वारा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी प.पू. लालजी महाराजश्री को शुभेच्छा देते हुए ।

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : magazine@swaminarayan.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १७ ● अंक : २०५-२०६ संयुक्त अंक अगस्त-सितम्बर-२०२४

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. प.पू. लालजी महाराजश्री का शुभ विवाह ०६

०४. सुंदर सप्तपदी १८

०५. गुरु पूर्णिमा आशीर्वचन २१

०६. श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से २५

०७. भक्ति सुधा २८

०८. सत्संग समाचार ३२

अस्मदीयम्

इस अषाढ महीने में महाराज की कृपा से हम सभी दो उत्सव के साक्षी बने है।

एक तो महाराजने बहनो के लिये गुरु निश्चित किये है। जो भविष्य में मुमुक्षु बहनो को दीक्षा प्रदान करेगी। प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी के विवाह के पश्चात स्वागत समारोह को (दिनांक १६-७-२०२४) सभी लोग भव्य रुप में मनाये है। अषाढ मास के मेघ ने पूर्ण साथ दिया है। कई हरिभक्त इस अवसर के गवाह बने है। अहमदाबाद देश के श्री नरनारायणदेव की गद्दी में प्रथमबार में दादा ने पौत्र के विवाह दादाने आशीर्वाद देने का लाभ लिये। हम सभी लोग स्वागत समारोह में तीन-तीन पीढी का दर्शन करके हृदय भर गया।

दूसरा इस बार गुरु पूर्णिमा रविवा रके दिन होने के कारण श्री नरनारायणदेव के चौक में श्रीहरि के तीनो अपररुप के आशीर्वाद का लाभ अधिक संख्या में हरिभक्तोने लाभ उठाया। अपने गुरु श्रीजी महाराज निश्चित करके गये है। हम सभी को गुरु खोजने नही जाना है। इस जीव को काल माया के भय से मुक्त करा सके ऐसा गुरु महाराज ने हम सभी को दिये है। हम लोगो को गुरु को खोजने नही जाना है। गुरु के उपदेशानुसार स्वधर्म में रहकर ही हमे अपना व्यवहार करना चाहिए। यही हम सभी की सच्ची गुरु दक्षिणा है।

मुझे एक तिसरी बात सभी हरिभक्तो को कहना है। अपने प.पू. आचार्य महाराजश्रीने मंदिर में कई वृक्ष लगवाये है। इस वर्ष के मौसम में सभी गाँव के औऱ शहरो के हरिभक्तो से विशेष अनुरोध है कि प्रत्येक आदमी घर रास्ते एळं खेत में वृक्ष (कम से कम पाँच) लगाये तथा उसके पालन की जिम्मेदारी स्वंय उठाये।

महाराजने नरनारायणदेव की स्थापना किये इसमं मैं अखंड निवास करता हूँ। ऐसा वचन दिये है। हम लोगो का सौभाग्य है कि ऐसा मनुष्य मिला है। तथा ऐसा सत्संग भी मिला है। ऐसे धर्मवंशी आचार्य की तीन स्वरुप अपने सामने है। आप के सानिध्य में भजन-भक्ति कर ले। यही इस जन्म की सार्थकता मानी जायेगी।

सभी हरिभक्तो को प्रेम से मेरा जय श्री स्वामिनारायण।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (अगस्त-२०२४)

३ से १३ सर्वोपरी श्री छपैयाधाम में परमपूज्य लालजी महराजाश्री के विवाहोत्सव, प्रयागराज में विवाह विधि वहाँ से छपैया बारात का प्रस्थान।

१५ पूरा धर्मकुल मेहमानो के साथ श्री नरनारायणदेव के दर्शन के लिये पधारे। प.पू. लालजी महाराजश्री का संत-हरिभक्तो द्वारा भव्य स्वागत अपने सानिध्य में पूर्ण किये । शायं श्री स्वामिनारायण म्युजियम में अपने सानिध्य में परिवारिक स्नेहीजनो के लिये सत्कार समारोह मनाया गया।

१५ श्री नरनारायणदेव के दर्शन के लिये पधारना । शायं साइंससीटी अहमदाबाद प.पू. लालजी महाराज के विवाह के अवसर पर सत्कार समारोह अहमदाबाद मूली और कच्छ-भूज तथा देश-विदेश के संत-हरिभक्तो की जनमेदिनी में पूर्ण किया गया।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में हजारो संत-हरिभक्तो ने धर्मकुल की पूजा-अर्चना करके गुरु पूर्णिमा उत्सव मनाये थे।

२७ श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु (आगमन) पधारना।

३१ श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।

(अगस्त-२०२४)

६ श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके अनेक हिंडोला दर्शन करके खुश हुए।

११-१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैया कथा के अवसर पर पधारना।

१७-२० नैरोबी, केन्या आफ्रिका में कथा अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०२४)

४ से १३ सर्वोपरी श्री छपैया धाम में विवाह विधि, प्रयागराज के लिये बारात का प्रस्थान पुन छपैया धाम पधारना,

१५ परमकृपालु श्री नरनारायणदेव अहमदाबाद में दर्शन के लिये पधारना । वहाँ पर महंत स्वामी आधि संतो एवम् हरिभक्तो द्वारा भव्य स्वागत पूजा पूर्ण की गयी । शायं श्री स्वामिनारायण म्युजियम में परिवारजन सत्कार समारोह में उपस्थित हुए थे।

१६ पूरे सत्संग के लिये आयोजित स्वागत समारोह में हजारो संत-हरिभक्त द्वारा भव्य स्वागत शुभेच्छा पूर्ण किया गया।साइंससीटी।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में श्रीनरनारायणदेव देश के हजारो संत-हरिभक्तोने धर्मकुल की पूजा-अर्चन करके गुरु पूर्णिमा पर्व मनाये।

२७ शादी के बाद जेतलपुर मंदिर में भव्य स्वागत एवम् समैया किया गया था।

(अगस्त-२०२४)

श्री नरनारायणदेव के दर्शन करके विविध हिंडोला के दर्शन करने पधारना।

६ असारवा श्री सहजानंद गुरुकुल श्री हनुमानजी दादाके दर्शन हेतु पधारना।

१९ पूनम की सत्संग सभा में पधारना।

२७ अमेरिका के लिये धर्मप्रवास।

श्री स्वामिनारायण

प.पू. लालजी महाराजश्री का

॥ शुभ विवाह ॥

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प्रस्तावना : संसार में धर्मप्रेमी भाविक लोग गुरु की खोज में निलकते है। किसी व्यक्ति का बाहरी दिखाव, धार्मिकता का प्रपंच-आडंबर और लोकप्रियता देखकर बस में आ जाते है। गुरु बनाकर अंत में पछताते है। कुछ लोग गुरु को भगवान मानकर व्यक्ति पूजा में लग जाते है। यह महादुःख प्राप्त करते है। भगवान बनकर बैठे नकली गरु के साथ से,

एवा पापीनो संग जैने थाय रे,
तेनो पण जन्म ऐले जाय रे।
कल्याण तो रही जाय क्यांई रे,
सामुं पडे महादुरव मांई रे ॥

भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने आश्रितो को सभी प्रकार की सुरक्षा और आन्तयन्तिक कल्याण के लिये अपने गद्दी के उपर गृहस्थ आश्रमी धर्मवंशी आचार्यों की स्थापना करके त्यागी गृही सभी को गुरु स्वयं खोजकर दिये है। श्रीहरि के बचनो में जिसका विश्वास है वह महासुख प्राप्त करता है। भूलने वाला अति दुखी होता है। हमारे गुरु कैसे है तो श्रीहरि बोले है।

एक ब्राह्मणने जाणो भक्त अति,
वलीकावे अमारु कुल ।
ऐने सेवता सौ जन तमो,
पामशो सुरव अतुल ॥

बहनो के लिये मात्र गुरु आचार्य पत्नी ही हो सकती है। ऐसा सुंदर विवेक अपने मूल स्वामिनारायण सम्प्रदाय के सिवाय अन्य धर्म में नही है। श्रीहरि के आज्ञा का पालन करके

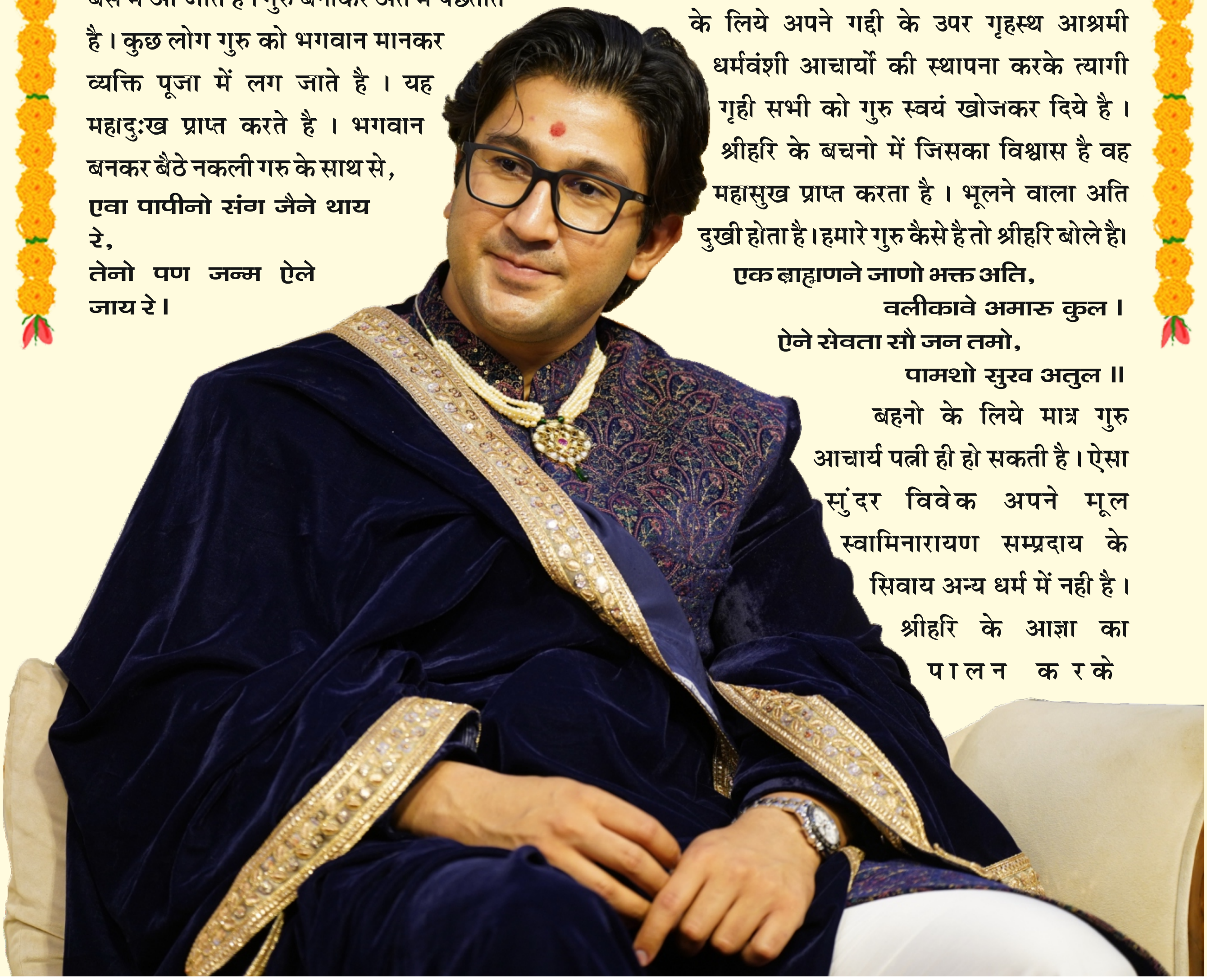

श्रीनरनारायणदेव की परमकृपा से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के सुपुत्र और इसी पीठस्थान के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ विवाह संस्कार महान तीर्थ भूमि प्रयागराज स्थित श्रीयुक्त शुक्लाजी के आयुष्यमान और लक्ष्मीजी तुल्य भाग्यशाली सुपुत्री के साथ ता. ११-०७-२०२४ सं. २०८० अषाढ सुद-५ दिन गुरुवार को बव्य रुप से पूर्ण हुआ।

लग्न पत्रिका : ता. २-७-२४ के शुभ प्रभात में श्रीगणेशजी और आराध्यदेव श्रीहरि के शुभ स्मरण के साथ श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. महाराजश्री सत्संग के लाडिला लाल के शुभ लग्न की कंकोत्री के उपर कंकु का तिलक अक्षत लगाकर सार्व प्रथम श्रीनरनारायणदेव के चरण कमल में शुभ पत्रिका अर्पण किये । तत्पश्चात लिखना प्रारम्भ किये। श्री नरनारायणदेव स्वयं अर्थात् श्रीहरि के आठवे वंशज ऐसे प.पू. लालजी महाराजश्री के उपर आशीर्वाद का अभिषेक किये।

छपैया बालस्वरुप घनश्याम महाराज समक्ष कंकोत्री लेखन

ता. ५-७-२०२४ के दिन प.पू. महाराजश्री छपैया बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज और देवो के चरणकमल में विवाह की शुभ पत्रिका अर्पण किये।

कंकु धोली लखाणी कंकोत्री,
वसे हरिजन देश-विदेश अवसर रुडे आवियो,
नाम ठाम, ने गाम, लखाविया,
वली उपमा लखावी विशेष अवसर रुडो आवियो।

इसके बाद में अहमदाबाद में स्वागत समारोह की शुभ पत्रिका पूरे धर्मकुल परिवार के द्वारा अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी अहमदाबाद देश के सभी मंदिर और हरिभक्तो को बाँटना का कार्य दिया गया । तथा वाटसएप के माध्यम से सभी हरिभक्तो की सार्वजनिक निमंत्रण पत्रिका भेजी गयी।

विवाह गीत : अहमदाबाद के सभी मंदिरो में बहनो ने प्रतिदिन नंद संतो द्वारा रचित विवाह के पद गाये गये । और शक्कर, गुड, पैंडा, चोकलेट, सूखा मेवा, मिठाइयाँ बाटकर मुह मीठा कराया गया। तथा अपने परिवार का भी मुह मीठा कराये।

मानिनी ते मणीने मंगल गाय रे,
उछरंग आनंद अंगे न माय रे।

कुंदनपुर विवाह रच्यो, सूणी भूपति भीमकराय
कन्या ते देवा श्रीकृष्णने, आनंद उर न समाय ।

अहमदाबाद मंदिर के ओच्छव मंडल श्री नरनारायणदेव के समक्ष एक दिन प्रसंगोनुसार कीर्तन-भक्ति ओच्छव किये थे ।

छपैयाधाम में पूर्व तैयारी : इस ब्रह्मांड की सर्वोपरि तीर्थभूमि छपैया जहाँ पर धर्मदेव का घर था । तथा उसी घर में सर्वावतारी सर्वोपरी भगवान श्रीहरि प्रगट हुए थे । जिस स्थान पर आज अपना मंदिर स्थित है । इस मंदिर में विराजमान देवो के सानिध्य में विवाह के पूर्व कार्यक्रम मनाने का निश्चय किया गया । पूरे विवाह विधि के हुते सुंदर प्रबन्ध परमपूज्य श्रीराजा के मार्गदर्शन तथा देखरेख में उल्लासपूर्ण हुआ । इसकी पूर्व तैयारी के लिये तथा प्रसंग पूरा हो तब तक आवश्यक सेवा करने के शुभ भाव से अहमदाबाद के अपने कई मंदिरो में दो-दो हरिभक्तभाई

एवम् बहन पहले से आये थे । ता. ३-७-२४ के दिन प.पू. महाराजश्री छपैया धाम पधारे थे। आपश्री के मार्गदर्शन एवम् आज्ञानुसार छपैया मदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. देवप्रकाशदासजी तथा धर्मकुल के कृपा पात्र प.भ.श्री करशनभाई राघवाणी तथा उनके साथ रहने वाले प.भ. अश्विनभाई सिरोया तथा ६-७-२४ से १२-७-२४ तक छपैया में ठहरे कालुपुर मंदिर के महंत पू. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी और कोठारी पू. शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी के देखरेख एवम् सहयोग से प्रसंगानुसार सभी तैयारी और प्रबन्ध किया गया । मंदिर, ठहरने की व्यवस्था, नया सभा हार, नारायण सरोवर सहित मंदिर के पूरे प्रांगण में लाइटींग डेकोरेशन, फूल की कलीया तथा ७०० जितने फुल के पौधे कुंडे मे रखकर सजावट की गयी थी । इसी प्रकार अहमदाबाद मंदिर कालुपुर के पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन से अहमदाबाद कालुपुर मंदिर, हवेली, सभा मंडप पूरे संकुल की सजावट की गई थी ।

श्री गणेश स्थापना-पूजन : संत निवास के पिछले भाग में नये हाल में विघ्न विनायक देव श्री गणेशजी की स्थापना की गयी थी । तीन दिन तक विधिवत गणेशजी की पूजा की गयी थी । पूजन विधि में प.पू. लालजी महाराज और धर्मकुल परिवार के साथ प.पू. महाराजश्री की बहन पू. बिन्दु राजा के सुपुत्र पू. सौम्यराजा भी विराजमान थे ।

विघ्नेश विघ्न चयरवण्डन नाम धेय श्री
शङ्करात्मज सुराधिपवंद्यपाद ।
दुर्गा महाव्रतफला रिवलमङ्गलात्मविघ्नं
ममापहर सिद्धि विनायक त्वम् ॥

हे विघ्नेश ! विघ्न समूह को नाश करना यह आप के मंगल नाम की महिमा है । हे शंकर पुत्र । आप देवाधिपति इन्द्रआदि के द्वारा वंदनीय कमलवत चरण वाले है । पार्वती के महाव्रत के फलरुप है । और

अखिलमंगलमय रुप में है । हे सिध्धी विनायक ! आप हमारे विघ्न को दूर करे ।

हिन्दु संस्कृति की यह पावनकारी वेदोक्त परम्परा की भक्ति भाव के सात अनुसरण की गयी ।

मेहंदी रस्म और हल्दी रस्म : प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के बहन-बहनोई तथा धर्मकुल के सभी आमंत्रित मेहमान छपैया में आ गये थे । प्रसंगानुसार धर्मकुल तथा तिवारीकुल की बहने मेहदी रस्म मनाये थे । साथ ही साथ प.पू. लालजी महाराजश्री को तीन दिन पीठ पर हल्दी लगाकर रिवाज को मनाया गया था । चंदन-हल्दी के लेप से उबटन लगाया गया था । बहनो ने नया सभा हाल में रास गरबा की थी ।

तिलक विधि तथा देव सेवा : ता. ८-७-२४ के दिन प्रयागराज से श्रीयुक्त समधीश्री के साथ ४० मेहमान पधारे थे । मेहमानो का स्वागत अच्छे से किया गया । मंदिर के चारो तरफ गृहस्थ आश्रम वाले नये वस्त्र-अलंकार पहनकर आये थे । चारो तरफ ध्वजा-पताका और प्रकाश की चमक थी । बेंडवाजा, शहनाई तथा ढोलबजाने वाले, आतिशबाजी का प्रभाव देखकर लोग अति आनंदित थे । प.पू. लालजी महाराजश्री नयनरम्य रुप से तैयार होकर मंदिर में देवो का दर्शन करके सुंदर हाल में पधारे थे । आप घनश्याम महाराज के अपररुप है । इसमें सहज तेज होता ही है । पंडित लोग अग्नि को साक्षी मानकर वेद मंत्र गान किये थे । पूरे धर्मकुल परिवार और परिवारजनो के सानिध्य में प.पू. लालजी महाराजश्री को तिलक विधी की गयी थी ।

इस अवसर पर अहमदाबाद, मूली और भुज से पधारे विद्वान ब्रह्मनिष्ठ अग्रणी संतो ने देव का दर्शन किये । प.पू. लालजी महाराजश्रीने शुभ कामना दी । इस प्रांत के सांसद श्री कलेक्टर श्री तथा डी.एस.पी. श्री इत्यादि तथा राजनीनिक प्रभावशाली और अधिकारीश्री आकर प.पू. लालजी महाराजश्री को शुभेच्छा प्रस्तुत किये ।

प्रकाश से जगमगता नारायण सरोवर छपैया ।

मंदिर में विराजमान देवो को प्रतिदिन अच्छे-- अच्छे वस्त्रालंकारो से सुशोभित, ताजा सुगंधित मोगरा तथा चमेली के फूलहारो से श्रृंगार करके राजभोग के लिये नये-नये मिठाई की थाल से किया गया ।

पिता-पुत्र मे आनंद का प्रवाह : श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप प्रंसगानुसार नये-नये वस्त्र परिधान धारण करके सभी का उत्साहवर्धन कर रहे थे । प.पू. महाराजश्री के जीवन में सदैव आनंद रहा है । इसमें भी इस अवसर पर प.पू. महाराजश्री, और .पू. लालजी महाराजश्री आपस में मित्र भाव से, मुक्त मन से हास्य करते थे । उनका दर्शन करने से प्रत्येक को ऐसा विचार आया होगा कि ऐसा निर्दोष मधुर प्रेम से युत स्मित संसार के किसी पिता-पुत्र में नही दिखेगा ।

माटे सहु धर्म मानजो, सहु करजो एनी सेव ।
अन्य जन जेवा एह नहि, ए चे जाणजो मोटा देव ॥

बारात का प्रस्थान : ता. ८-७-२०२४ के दिन प्रात: ८-३० बजे चार लक्जरी बस अधिक संख्या में चार चक्के वाली गाडियो के साथ बारात छपैया से प्रयागराज की तरफ प्रस्थान की । धर्मकुल अर्थात् धर्मदेव का कुल

वर्षो पहले धर्मदेव की इटार गाँव से सुंर बारात आकर कृष्णशर्मा के यहाँ भक्तिदेवी के साथ धर्मदेव का विवाह हुआ था। कृष्णशर्मा की शुभ भावना पूरी करने के लिये धर्मदेव बाद में छपैया गाँव में ही रहे। असुरो तथा अधर्मियो से दुःख प्राप्त करके मुक्ति के लिये अयोध्या में प्रयागराज में आये। वहाँ पर उद्धवजी के अवतार रामानंद स्वामी मिले। तथा रामानंद स्वामीने धर्मदेव, भक्तिदेवी के साथ भागवती दीक्षा दिये थे। आज उसी धर्मदेव के कुल में प्रगट हुए। प.पू. लालजी महाराजश्री बारात छपैया से प्रयागराज मे आयी है। सभी बाराती को उत्साह और आ नंदकी सीमा नही है। श्रीहरि के ८ वे वंशज और श्री नरनारायणदेव पीठस्थान के भावि आचार्य के विवाह मे जाने का अवसर प्राप्त हुआ है। उसके भाग्य का वर्णन कौन कर सकता है। धर्मदेव के कुल और भक्तिदेवी के कुल से आमंत्रित लोग विवाहमें भाग लिये है। यहाँ पर उल्लेखनीय यहहै कि।

सांख्ययोगी होई बाई-बाई तेने जावुं नहि विवामाई।

प्रकाश से जगमगता छपैया मंदिर

श्रीहरि के द्वारा स्थापित मर्यादा के अनुसार कोई त्यागी संत-सांख्ययोगी बहन विवाह तथा विवाह पर नही उपस्थित रहते है। इतना ही नही, धर्मकुल के समीप सम्बंध बिना अन्य गृहस्थ भी वहाँ पर नही जाते है।

विवाह विधि तथा भव्य इतिहास के संस्मरण : प्रयागराज में समधी के पक्ष की ओर से बारात का स्वागत किया गया। वरघोडा तथा विवाह विधि की भव्यता की मात्र कल्पना कर सकते है। वरघोडा जा रहा था। उसके सामने आतिशबाजी की जा रही थी। ढोल नगारा तथा शहनाई बजायी जा रही थी।

ता. २५-१-१९९६ में गुरुवार के दिन रात्रि में जप प.पू. महाराजश्री की फैजाबाद में विवाह चल रहा था। तभी हस्तमिलाप के समय अपने पेथापुर स्वामिनारायण मंदिर में अर्धरात्रि १५ मिनट तक बंद कमरे में अपने आप नगारा बज रहा था। यह देखकर गाँव के लोग आश्चर्य चकित हो गये थे। प.पू. लालजी महाराजश्री का जब अयोध्या के हनुमानगढी में मुंडन संस्कार हो रहा था। देवताओने आकाश से सुगंधित चंदन-पुष्प की वर्षा किये थे। अमिय बूंद हमारे हाथ के उपर भी पडे थे। (आधी बाह का शर्ट पहने थे) । बहनो के विभाग में मेरी माँ भी इसीतरह की अनुभूति की थी। यह बात मुझे माँने बताया था। इतिहास इस लिये लिखा हूँ कि प.पू

महाराजश्री के विवाह विधि में देवता लोग आकाश में रहकर चंदन पुष्प की वृष्टि की ही होगी। यह श्रद्दा का विषय है। श्रीहरि के महिमा का कोई पार नही पा सकता है। उसी प्रकार श्रीहरि द्वारा स्थापित आचार्य पद की महिमा का पार नही मिल सकता है। यह अपन भविष्य के आचार्यश्री के विवाह की विधि है।

प्रयागराज में जो कोई भी विवाह के निमित्त जो मनुष्य धर्म कुल का दर्शन किये है। उनके भाग्य खुल गये। ये श्रीहरि के शब्द है।

श्रद्धा सहित सेवा करे सोई रे,
वली राजी थशे एने जोई रे ।
ऐवा जन जे जे जगमांय रे,
तेनी करवी मारे सहाय रे ॥
धन्य सखी सुदंर वर परणे रे,
तन मन सोंपी हरि शरमे रे ।
काम क्रोधना जव तल बाल्या रे,
संशय शोक सर्वे तिया टाळ्या रे ॥

प.पू. लालजी महाराजश्री विवाह के पूर्व अनपे तन, मन, धन से सत्संग की सेवा के लिये हरि शरण में है। विवाह के बाद भी यह सर्मपण रहने वाला भी है।

ब्रह्मा उचरे वेद बचन रे,
जय, जयकार थयो त्रिभुवन रे ।
चारे फेरा हरिसंग फरिया हरे,
नारी जगना जीवन ने वरिया रे ॥

सुंदर सजे हुए विवाह मंडप में वेदोक्त विधि से ब्राह्मणो ने अग्नि की साक्षी में अच्छे से पूर्ण किये। प.पू. लालजी महाराजश्री आराध्यदेव के आज्ञानुसार गृहस्थ आश्रम की दीक्षा स्वीकार करके। जिसके कारण अहमदाबाद देश के स्त्री भक्तो को भविष्य की प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री मिली है।

बारात छपैया के लिये वापस : खुशी-खुशी से विवाह का अवसर पूर्ण हुआ। बारात छपैया मंदिर में वापस आयी। मंदिर में प्रवेश करते ही उपस्थित त्यागी और गृहस्थ लोग स्वागत किये। नवदम्पत्ति धर्मकुल के परिवार के सदस्यो के साथ मंदिर में देव दर्शन के लिये पधारे थे। आराध्यदेव का आशीर्वाद लिये थे। नव विवाहित जोडेने अपने माता-पिता और दादा-दादी के चरणो में भाव-विभोर होकर प्रणाम किये। तथा सभी ने आशीर्वाद प्रदान किया। सत्संग की सेवा करके अपार यश प्राप्त करो।

कहे सुखी रहेजो नरनार रे, यशेयश तमारो अपार रे

प.पू. बहुजी महाराजश्री कितनी त्यागी है ओजल छत्री में रहकर पूरे जीवन सत्संग की सेवा का व्रत ली। संसार में स्त्री का त्याग इससे बडा कही नही मिलता है।

अहमदाबाद और जेतलपुर मंदिर में स्वागत : छपैया से धर्मकुल परिवार अहमदाबाद आकर सबसे पहले अपने अहमदाबाद मंदिर में दर्शन के लिये पधारे तभी भक्तलोग फूलो की रंगोली बनाये थे। मंदिर से हवेली तक बहनो ने ताजा सुगंधित फूल बिछाकर रास्ते बनाये थे। ढोल, शहनाई बाजा के साथ पू. महंत स्वामी और ट्रस्टीगण प.पू. लालजी महाराजश्री को फूल का हार पहनाकर स्वागत किये थे। तीनो अपर स्वरुपो की आरती उतारी गयी। लडकियाँ माथे पर कलश धारण करके हवेली के सामने कतारबद्ध खडे रहकर प.पू. बहुजी महाराजश्री का स्वागत किये थे। हवेली में बहनोने लक्ष्मीजी के तीनो अपर रुपो को दर्शन किये।

इसी तरह प.पू. लालजी महाराजश्री जेतलपुर मंदिर में श्री रेवतीबलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के दर्शन करने प्रथमबार पधारे वहाँ सुंदर तरीके से सजे मंदिर संकुल में पू. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी एवं महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकादासजी ने प.पू. लालजी महाराजश्री का भावभीनी स्वागत सन्मान किया था। बहनोके विभाग में पू. सांख्ययोगी बहनोने प.पू.अ.सौ. वहुजी महाराजश्री का स्वागत सन्मान किया था।

विवाह के बाद सर्व प्रथम अहमदाबाद मंदिर में पधारते प.पू. लालजी महाराजश्री का भव्य स्वागत किया गया

स्वागत समारोह : १६-७-२४ के दिन शायं ५ बजे से ८ बजे तक विज्ञान भवन हाल साइंससिटी अहमदाबाद में साम्प्रदायिक मर्यादा और रीति अनुसार स्वागत समारोह का भव्य प्रबन्ध किया गया था । प.पू. महाराजश्री के मार्गदर्शन से अहमदाबाद मंदिरके पू. महंत स्वामी के देखरेख में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के पूरे आयोजन और मार्गदर्शन में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और सेवा भावी भक्तजनो के सहयोग से पू र्ण हुआ । प्रवेशद्वार के दोनो तरफ एक-एक श्री नरनारायणदेव की प्रतिकृति का दर्शनक राया गया। अंदर वृक्ष, लता, कुंडा, फूलो की रंगोली लाइटींग रोशनी की सजावट के शोभा का कोई पार नहि था । संतो-भक्तो को बैठने के लिये सोफा आदि की कमी नही थई । तीनो प.पू. लक्ष्मीस्वरुपाश्री तथा

विवाह के बाद सर्व प्रथम जेतलपुर मंदिर में पधारते प.पू. लालजी महाराजश्री का भव्य स्वागत किया गया

विवाह के बाद सर्व प्रथम असारवा वीर हनुमानजी का दर्शन करने पर प.पू. लालजी महाराजश्री का स्वागत किया गया

बहनो का अलग विभाग था।

श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप पधारे थे तब प.पू. लालजी महाराजश्री के हजूरी पार्षद श्री वनराज भगत सुशोबित छत्र धारण करके रुके थे। इस अवसर पर हजूरी पार्षद की बात ही नही की जा सकती है। ये उस समय शूट-बूट के सात सज्ज थे। प.पू. लालजी महाराजश्री सूट में सुदंर दिख रहे थे। स्वागत के बाद तीनो स्वरुपो पर विराजे थे। उस समय चरणस्पर्श तथा बैठने की विधि का ज्ञान विश्व विश्व को समझने योग्य है।

व्यवस्था के अनुसार सर्वप्रथम प.पू.श्रीराजा स्टेज पर आकर पुष्पगुच्छ अर्पण करके प.पू. लालजी महाराजश्री शुभ कामना दिये थे। श्रीहरि के तीनो अपररुप क्रमशः खड़ा होकर प.पू. श्रीराजा ने अलौकिक प्यार किया। परिवार मे परस्पर प्रेम का संदेश देने वाली है।

इसके बाद सर्वप्रथम अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी, श्री नरनारयणदेव के पूजारी ब्रह्मचारी संत और भुज, मूली इत्यादि के महंत संत, ब्रह्मनिष्ठ फूलहार लेकर शुभकामना व्यक्त किये। भुज के पू. महंत स्वामी, भुज के हरिभक्तो द्वारा सोने का हार पहनाये थे। अहमदाबाद देश के सभी भक्तगण पुष्प तथा चांदला देकर शुभकामना व्यक्त किये थे।इसी प्रकार बहनो के विभाग से भी शुभकामना दी गयी थी।

गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल सहित अनेक राजकीय, सामाजिक, धार्मिक महानुभाव तथा विदेश में रहने वाले एन.आर.आई. साक्षात् आकर तथा कुछ लोग पत्र एवम् मोबाईल के माध्यम से शुभ संदेश भेजे थे।

हजारो हरिभक्त तथा सज्जन शुभेच्छा देकर मिठाई के साथ भोजन ग्रहण किये थे।

पूरे समारोह के मध्य संगीतज्ञो की टीम संगीत की धारा चालू रखे थे। अंत में आये हुए सभी भक्त जनो का अभिवादन करते-करते श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप विदाई लिये। अषाढ़ मास होने के बाद भी मेघराजा धर्मकुल की ईज्जत की रक्षा करते हुए वर्षा नही किये। समारोह के पश्चात हल्की वर्षा हुई।

धर्मकुल प्रेमी भक्तगणो के लिये स्वागत समारोह एक दिन का उत्सव समैया के समान रहा।

प.पू. लालजी महाराजश्री को शुभेच्छा देते प.पू. श्रीराजा

शुभेच्छा देते संत-महंतश्री

शुभेच्छा देते विशेष महानुभाव

शुभेच्छा देते विशेष महानुभाव

शुभेच्छा देते विशेष महानुभाव

पद्मभूषण डॉ. तेजस पटेल और अपने आकलैण्ड (न्युजीलैण्ड)
मंदिर के प्रेसिडेन्ट डॉ. कांतिभाई पटेल के साथ प.पू. बड़े महाराजश्री

सौभाग्यी सप्तपदी

- अतुल पोथीवाला (अहमदाबाद)

अपने सम्प्रदाय के और सभी के प्यारे एसे प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का शुभ विवाह संवत २०८० अषाढ सुद पंचमी को गुरुवार ता. ११-७-२०२४ के शुभ दिन पर सर्वोपरिधाम छपैया में उल्लासपूर्वक मनाया गया।

विवाह के समय धर्मकुल परिवार सीमित संख्या में थे । और पूरे सम्प्रदाय के सभी सत्संगी लोग व्याकुलता असीमित थी । इसलिये संवत २०८० अषाढ सुद-१० ता. १६-७-२०२४ को मंगलवार के दिन अहमदाबाद वेडिंग रीसेपशन अर्थात् स्वागत समारोह रखा गया था।

साइंससीटी रोड पर स्थित विशाल साइंटसीटी के प्रांगण में विशाल विज्ञान-भवन होल में (गेट नं.५) भव्य सत्कार मनाया गया था । अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी पू. श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (पी.पी. स्वामी) कोठारी श्री मुनि स्वामी, पू. राम स्वामी, पू. दिव्यप्रकाश स्वामी सहित सभी संत तथा अपने श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के भाई-बहनो ने स्वागत समारोह में चार चांद लगा दिये । रीसेप्सन हाल तो विशाल था । लेकिन आये हुए मेहमानो के विशाल भोजन व्यवस्था भी करना था । साइंससीटी प्रांगण में चार डोम बनाना पडा था । तथा उसमें भोजन-प्रसाद की उत्तम व्यवस्था थी।

प्रवेश द्वार से लेकर स्वागत हाल के मध्य रंग-बिरंगे श्वेत पुष्पो से सजाया गया था । सभाहोल में विशाल स्टेज भी बनाया गया था । भाईयो और बहनो के बैठने के लिये उत्तम प्रबन्ध किया गया था । पूरे हाल को सुंदर रुप से सजाया गया था।

प.पू. गादीवालाश्री, प.पू. बड़े गादीवालाश्री और अ.सौ. पू. बहुजी महाराज, पू.श्रीराजा, पू. बिंदूराजा सभी के लिये बहनो के विभाग में सुंदर व्यवस्था की गयी थी।

विशाल सम्प्रदाय के सभी सत्संगी और आमंत्रित के विशाल समूह के अनुसार समय का प्रबन्ध किया गया था।

भुज, मूली प्रदेश	: शायं ५ से ५-३० बजे तक
बनासकांठा, साबरकांठा	: शायं ५-३० से ६ बजे तक
उत्तर गुजरात, पंचमहल	: शायं ६ बजे से ७ बजे तक
अहमदाबाद, विदेश	: शायं ७ बजे

अच्छी व्यवस्था होने के कारण पूरे समारोह के समय कही पर भी भीड एवम् शोरगुल नही दिखाई दिया था । प्रदेश अपने समयानुसार क्रमशः स्टेज पर आकर भावपूर्वक प.पू. लालजी महाराजश्री को शुभेच्छा प्रगट करते हुए । तीनो हरि के स्वरुप का दर्शन करते बाहर आ रहे थे । शुभेच्छा दर्शन करके बगल में भोजनशाला डोम में जा रहे थे । लोग शांतिपूर्वक भोजन ग्रहण कर रहे थे ।

५ बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा सभा में सर्वोपरि ऐसे प.पू. लालजी श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री धीरे धीरे स्टेज पर आकर विराजमान हुए थे। तथा फूल हार से स्वागत किये थे । समारोह के प्रारम्भ करने के लिये सर्वप्रथम पू. श्रीराजाश्री को आमंत्रित किया गया था । वह स्टेज पर आकर प्रिय भाई को पुष्पगुच्छ दिये थे । भाई खडे होकर पुष्पगुच्छ स्वीकार किये थे । तथा प्रेम से बहन का आलिंगन किये थे । शुभकामनाओ का आदान-प्रदान अधिक संख्या में किया गया । इसके बाद पू. पिताश्री और पू. दादाश्री भी खडे हुए । अपने प्रिय बेटी का वात्सल्यपूर्ण भाव प्रदर्शित किये । धर्मकुल परिवार तथा बृहद सत्संग परिवार के लिये यह दृश्य अविस्मरणीय बन गया था ।

प्रथम भुज-मूली प्रदेश था । भुज मंदिर के महंत स्वामी पू. धर्मनंदन स्वामी, पू. जादवजी भगत सहित दूसरे आदरणीय संत स्टेज पर आये और प.पू. लालजी महाराजश्रीने प्रेमपूर्वक शुभेच्छा दिये थे । इसके बाद अहमदाबाद देश-प्रदेश में आये सभी मंदिरो के महंत स्वामी बदल-बदलकर स्टेज पर आकर शुभेच्छा दिये थे।

प्रदेश के समयानुसार आमंत्रित सत्संगियो एवं मेहमान कतारबद्ध होकर शुभेच्छा दे रहे थे । और धर्मकुल के तीनो आचार्यश्री के त्रिवेणी संमग में भाव विभोर बनकर धन्यता माने थे ।

बहनो के विभाग में भी इसी तरह की व्यवस्था अनुसार सत्संगिबहनोने शुभेच्छा के साथ तीनो विभूतियो का दर्शन किये थे ।

भोजन की बात करे तो सत्कार समारोह के अनुलक्षी मेनू निश्चित किया गया था । सूप, चाट, मेइन कोरष डेजर्ट, अंत में स्वादिष्ट आइसक्रीम, प्रत्येक व्यंजन स्वादिष्ट, सात्विक और रूचिकर था । सभी लोग भोजन का आनंद प्राप्त किये ।

शायं ५ बजे से ८ बजे तक ३ घंटे तक प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. महाराजश्री इन तीनो स्वरुपो ने प्रेमपूर्वक हँसते हुए सभी का स्वागत किये थे ।

प.पू. बड़े महाराजश्री प्रेम भरी आँखे अनायास सभी के प्रति आशीर्वाद देती रही । प.पू. आचार्य महाराजश्री अपने पद के शोभा अनुसार **V.VIP/V.I.P.** छोटे-बड़े आगंतुक मेहमान का स्वागत किये । प.पू. लालजी महाराजश्री अपने शांत, मृदुभाषी

स्वभाव के अनुसार मीठी हँसी से सबका दिल जीत लिये।

जीवन में कभी ऐसे अमनोल प्रसंग मे जाना आना हो । इसमें यह तो अपने सम्प्रदाय के श्री नरनारायणदेव गद्दी का एक और मात्र एक बड़ा प्रसंग था। यह सत्संग के लिये शुभ चिन्ह है। यह जो अपनी **(Young Generation)** है । यह सत्संग के संस्कार से तैयार हुई है। इसमें **60+** के सत्संगियो में **Ego** नही दिखायी देता है। । सत्संग वैज्ञानिक तर्क-वितर्क पर आधारित है। ये लोग उत्साहपूर्वक सत्संग में भाग लेते है। मात्र प.पू. महाराजश्री के आदेश-आज्ञा से संतो के प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से यह विशाल कार्य अच्छे से पूर्ण हुआ। किसी कठिन कार्य को कैसे सफल बनाया जा सकता है। इसमें प.पू. लालजी महाराजश्री का यह स्वागत समारोह याद आयेगा। संतो का सहयोग अच्छा था। चाहे वह स्टेज का प्रबन्ध हो या भोजन का प्रबन्ध हो। यह कार्य सरल तो नही था। सत्कार समारोह का **Live Telicast** अपने **U-Tube** चैनेल से स्टीम लाईन होता रहता है । जिस में देश-विदेश में निवास करने वाले जो इस अवसर पर नही आ सके। सभी सत्संगियो को प.पू. लालजी महाराजश्री के वेडिंग रीसेप्शन की भव्यता का (दूर से) दर्शन का सके।

जहाँ पर सर्वोपरि श्रीहरि साक्षात् उपस्थित हो वहाँ पर सब कुछ सरल, सहज सुंदर और उत्कृष्ठ ही होता है। धर्मकुल परिवार का यह प्रसंग अपने सत्संग का भी ''महाप्रसंग'' था। इस अवसर को सम्प्रदाय भावना से मनाया गया।

''विवाह'' सोलह संस्कारो में एक महत्व एवम् पवित्र संस्कार है। प.पू. लालजी महाराजश्री इस सुंदर सप्तपदी को अति उल्लासपूर्ण रुप से पूर्ण किये।

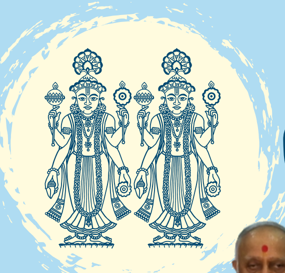

गुरुपूर्णिमा आशीर्वचन
2024

- संकलन :
गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)

प.पू. बड़े महाराजश्री ता. २१-७-२०२४ (कालुपुर मंदिर) : आदरणीय संतो एवं प्यारे सत्संगी भाइयो, अपने नारायणवल्लभ स्वामी की यह संख्या को महत्ता है। २+३ और ३+४ प्रत्येक स्पीच में बात करते है। यह उदाहरण हमें अच्छा लगता है। आज २ - ३ उदाहरण देना है।

जब हम कालेज में पढते थे। दो प्रकार की कारे बाजार में मिलती थी। एम्बेसेडर और फियट। इसकी भी बुकिंग करनी पडती थी। अभी तो अधिक संख्या में गाडीयाँ मिलती है। समझ गये ? सेवक भी गाडी रखते है क्योकि हप्ता में मिल जाती है। आज कल गुरु लोग भी वैसे ही है। आप को जितना चाहिए। उतने मिल जायेगे।

दूसरी बात, एकबार वारासणी में काशी-विश्वनाथ मंदिर के सामने मेरे मामा का घर है। जब मैं छोटी उम्र का था। मैं लोबी में बैठा था। उस समय एक साधु मोर पंख लेकर बैठता था। जो दर्शनार्थी वहाँ से गुजरते थे। उसी मोर पंख से उन्हे स्पर्श करता था। बाबा हाथ आगे करके कहता था आशीर्वाद दिया हूं पैसा दो। यह एक

प्रकार पैसे का था। दूसरा प्रकार है । एक पुरानी बात है। अमेरिका में एक हरिभक्त की ईच्छा हुई । अपने संत प्रायः कथा करते है । इस बार अपने मंदिर में परोक्ष लाभ ले लिये बाहर से एक विद्वान वक्ता लाते है। वक्ता सामान्य थे। उन्होने कहा की भारत में हमारी कथा के लिये दो वर्ष पहेल से बुकिंग हो गई है। यहाँ पर शायद ही कोई आता हो। मैं कुछ लेता नही हूँ। वह आदमी उनसे कथा कराया। कथा समाप्त हो जाने के बाद वह १०००० डालर माँगे ! कैसा ? मैं तो पैसा नही लेता हूँ । बाजावाले को देना पडता है । अलग-अलग पैकेज होता है । आप को निश्चित करना है कि कौन सा पैकेज आपको पसंद है।

तीसरी बात ५० वर्ष पहले एक स्पेशियल ट्रेन लेकर हम लोग प्रवास पर गये थे । यह इच्छा थी कि हरिभक्त और संतो को साथ सत्संग में छपैया जाये। उस समय ट्रेन में कम सुविधा थी। पुराने डिब्बे, पंखे भी नही, कुछ लाईट बंद तो कुछ चालू थी। गर्मी का समय था। हम लोग अधिक परेशान हुए थे । एकबार ऐसा लगा कि प्लेटफार्मे पर धुम आये । हरिभक्तो से मिल आये । निकलने पर देखे कि कुछ हरिभक्त बगल के ट्रेन के बारी में बैठे थे । बारी मे से मुझको जयश्री स्वामिनारायण कहने लगे। हम बोले आप लोग कैसे यहां पर है ? बोले इस ट्रेन में पंखा-लाईट चालू है। हम बोले यह ट्रेन दूसरे स्थान पर जायेगी। यदि एक बार चलदी तो उतरने पर क्षति आ सकती है। आज के दिन का यह तीन उदाहरण काफी है।

महाराज को पहचनवाये वही सच्चा गुरु है। जो जैसे टूथपेस्ट तथा साबुन बदलते है। उसी प्रकार कई लोगो की आदत होती है कि गुरु बदलते है। अमेरिक का एक हरिभक्त दो-चार महीने में आते है। मुझे पूछना पडा कि अब आप का कौन गुरु है ? छ महीने में गुरु बदल देता है। शेष मुझे कुछ कहना नही है । नरनारायणदेव की असीम कृपा से आप सभी समझे इतना कह कर समाप्त कर रहा हूँ।

प.पू. लालजी महाराजश्री : श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में गाँव-गाँव से देश-विदेश से देव का दर्शन करने के लिये आज गुरु पूर्णिमा के पावन दिवस पर इतने संख्या में हाजिर है । अहमदाबाद देश के सबसे गर्व करने वाली बात आपस में प्रेम तथा सौहार्द है। भगवान को कैसे खुश करे। सत्संग का विकास कैसे करे। यह बात यदि सभी को समझ में आ जाये। तो आपस में प्रेम, एकता स्थायी रुप से बनी रहेगी।

स्वामिनारायण भगवानने अधिक परिश्रम करके हम सभी को सत्संग दिये है। इस समय हम सभी की जिम्मेदारी है कि कई व्यक्तियो तक स्वामिनारायण भगवान के सिद्धान्त को घर घर तक व्याप्त करे । स्वामिनारायण भगवान हम सभी को मोक्ष का सरल मार्ग बताये है। सत्य धर्म का मार्ग बताये है। किसी प्रकार का भ्रम नही है। थाली में परोसकर दिये है। इस प्रकार अपनी जिम्मेदारी बनती है। हम अपने जीवन में उतार कर समझे। आजकल कई लोग गैर मार्ग पर ले जाते है। भगवान के साथ जोडने वाले कम मिलते है।

हम सभी स्थायी भगवान के बन कर रहे । स्वामिनारायण सम्प्रदाय का मूल सिद्धान्त दिये है। वह शिक्षापत्री मं दिये है। देश विभाग में लेख है। वचनामृत आदि शास्त्रो में इसी छोडकर कही नही जाना है। भजन भक्ति, निष्ठा, देव के प्रति श्रद्धा और वफादारी अपने जीवन में बना रहे । यही नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना है।

प.पू. महाराजश्री : अभी बापजी ने जो बात कहे है । ट्रेन में डब्बा कही बात है । मुझे अच्छा लगा पंखा देखकर बैठ गये । बापजीने कहा आप लोग गलत जगह पर बैठे है । मैं रहता तो कहता जाने दो । पंखे का स्वाद लेने दो । भले भटके ड्राईवर से बोल दे कि समय से पहले चला दो डबल इंजिन लगा दो । महाराज ने कहा है कि कीडियारा के रोग के अंग को काटकर निकालना पडता है । जहाँ जाना हो जाने दे । महाराज कहे है कि सत्संग में रहा कुसंग क्षति पहुँचाता है । इससे अच्छा न रहे तो सर्वोत्तम है।

अभी पी.पी. स्वामी और दूसरे संतो से बात करे । देश विभाग की लेखनी । सम्प्रदाय का संविधान है । इसमें महाराजने सब कुछ बता दिया है । इस लिये मैं ऐसा मानता हूँ कि एक वस्तु मुझे जरा भी पसंद नही है । **Seriously** मैं बता रहा हूँ कि कई लोग कहते है कि हम देव और आचार्य के आज्ञा का पालन करते है । हमारी आज्ञा में नही रहे । सभी आज्ञा तो देव की है । हमारे आज्ञा में कहाँ रहना है । मैं हजार बार कहा हूँ । कोई एक श्लोक बढ़ा नही सकता है।

भाई ! बंद करो या पीछले भाग में चले जाओ (मोबाईल में बात करना हो तो) इतना बडा तिलक लगाकर (विवेक की मर्यादा रखे) दुनिया में कुछ रुकने वाला नही है । सब कुछ होने वाला है । यह नरक का द्वार है । (मोबाईल) मजाक कर रहा हूँ । चिंता मत करे । बच्चा चालाक है । मेरा कान चारो तरफ सुनता है । इससे तकलीफ होती है।

पी.पी. स्वामीने कहा, बम फूटता है । कुछ नही होने वाला है । हमारे घर में कहा फूट रहा है । उसके घर में फूटता है । यह बम भारत तक आसकता है । यह सम्भव नही है । आप को ज्ञात है ? यह बम है कि नही । हवा निकले तो । यह वैज्ञानिक है । आप देखे, मिसाईलो की रेंज नही है । जहाँ पर खाने के लिये दो रोटी नही होती है । वहाँ पर मिसाईल नही बनती है । इस बात को जाने दे । अपने बोर्डर मे नही आ सकता है । हमे किसी प्रकार की चिंता नही करना है । महत्वपूर्ण बात यहा है कि देवने जो मर्यादा एवम् सिद्धान्त पालन करने की बात कहे है । वह देश विभाग का लेख माने । शिक्षापत्री माने या सत्संगिजीवन या प्रसादी के पात्रो को माने । सभी जगह पर महाराज ने स्पष्ट कहा है । यह बाद में कहाँ से भूत आ गया है । लेकिन यह अभी ताजा ही है । हम देव और आचार्य के आज्ञा का पालन करते है । मुझे तो पता नही चलता है कि महाराज सब कुछ बता दिये है । हमे कहाँ पर नया करना है ? देव का बनकर रहे इसमें सबकुछ आ जाता है । इससे अधिक कोई प्राप्ति नही है । हम सभी कितना भी डब्बा बदले, वह पूरा जीवन बदल देगे । जिसका किनारा भगवान से जुडता हो यह लक्ष्य होना चाहिए ।

आप सभी लोग यहाँ पर एकत्र हुए है । लालजी महाराजश्री के प्रसंग पर आप सभी आये थे । यह सम्प्रदाय अपना परिवार है । इस लिये एकत्र होकर आनंद प्राप्त किये । इससे आपस में प्रेम बढता है । कोई संत यदि कडॉक स्वभाव से मिले है तो वह ममत्व से कहते है । ममत्व के बिना अधिकार नही मिल सकता है।

हम सभी भाग्यशाली है । देव के दरबार में पवित्र भूमि पर जहाँ पर सम्प्रदाय की नींव रखी गई है । नींव की शुरुआत की गयी है । इस भूमि पर हम सभी नरनारायणदेव के सानिध्य में विराजमान है । इनका बन कर रहना है । दूसरा कुछ नही करना है । सब कुछ भगवान करते है।

गुर..... गुरु..... भी गुरु शब्द अब तो गरीब हो गया है । मुझे अच्छा भी नही लगता है । बापजी कहते है । आज कल प्रचुर मात्रा में गुरु निकले है । जिसे गुरु होना है । वह बने । हमारे तो एक ही गुरु है । यह सामने नरनारायणदेव

बैठे है। भगवान तो पूरे संसार के गुरु है। यही गुरु भगवान द्वारा स्थापित धर्मवंशी आचार्य परम्परा में आपश्री हम सभी को गुरु रुप में मिला है। साम्प्रदायिक सर्व शास्त्र के आधार पर बात है। फिर भी आपश्री की महानता है कि अपने मुख से कभी कहते नही है।) हमे कही पर जाने की आवश्यकता नही है। यहाँ की एक रजकण प्राप्त करेगे। हरिभक्तगण जहाँ पर बैठे है। यहाँ पर उनके पैर पडे है। जीव का कल्याण हो जायेगा। क्योकि आप सभी नरनारायणदेव के दर्शन के लिये आये है। यह वास्तविकता बता रहा हूँ। यह देवकी महिमा है। यह सच्ची महिमा है। यह स्वाभिमान की बात है।

दत्तात्रेय ने २४ गुरु बनाये थे। मैं तो २४०० से अधिक रखता हूँ। प्रत्येक में से गुणबुद्धि रखता हूँ। जिन्हे गुरु बनना है उन्हे अधिक मेइतिनेन्स करना पडता है। सभी को अधिक सम्भालना पडता है। क्यो कि ? कैसे है ? ठीक है ? खाये ? या नही खाये। पंखा की नीचे इन्हे सम्भालना पडता है। यह सब सिर दर्द है। हमे वैसे लगाव और प्रेम है। संत-हरिभक्त के पास प्रेम लगाव अधिक होता है। विशेष करके ये देव है। यह परम्परा रहेगी तो वातावरण और सिद्धान्त अवश्य आयेगा। यह अति आवश्यक है। यह सब व्यक्ति को स्वाभिमान प्रदानक रता है। मै कह रहा हूँ और बोल सकता हूँ यह देव का स्वाभिमान है। देव का बनकर रहने पर भय नही होता है। वह निर्भय रहता है। शेष बंदूक रखकर टहलने वाले महाडरपोक होते है। कुछ साधु लोग बंदूक रखते है। दो आदमी साथ रखते है। भाई आप को कौन ? मारने वाला है। आप को मार कर क्या करेगा। साधु बन जाने के पश्चात मरने की चिंता क्यो ? जो मनुष्य त्याग कर दियै है उसे **Civic Death** कहते है। यह सत्य है। उसमें भी अपने सम्प्रदाय का साधु बंदूक रखे तो भयंकर बात है। बात इतनी सी है निर्भयता भगवान के चरणो के सिवाय कही पर नही है। मुझे स्वाभिमान है। कल देह छूट जाय तो चिंता नही है। क्योकि देव के समक्ष आंख रखने की क्षमता है। ताकात भी है।

इस नरनारायणदेव के दरबार में (प्रांगण) में संत है। हरिभक्त है। बहने है। कुछ लोग खडे है। सभी निष्ठावान है। इस लिये सभी आये हुए है। यहाँ पर कोई चमत्कार नही है। नाटक नही, व्यापार भी नही करते है। जो कुछ है भगवान सामने है। दूसरा सम्प्रदाय के नाम से जो चल रहा है। उसे चलने दे। पंखा की हवा वाले को अधिक हवा दे। मुझे तो बडी मातुश्री-दादी-अम्मा का स्वाभिमान है। वह हमारे शरीर में है। हवेली में तरह-तरह के लोग आते है। इस लिये री बडी मातुश्री पैर उपर कर लेती है। बोलती है पैर छुकर हमे भ्रमित मत करो। उस समय की सांख्ययोगी बहने कहती थी। ऐसा करेगी तो कोई नही आयेगा। तब वह कहती थी। यह तो नरनारायणदेव का दरबार है। यहाँपर कभी आदमी कम नही थे। है भी नही, और होगे भी नही। आप कल्पना करें। आज हम उस वातावरण में पले है। फिर भी जो विवाह करके आयी है। आचार्यश्री की पत्नी हो या बहुजी हो ये सभी अलग वातावरण से आती है। उसमें देव के प्रति निष्ठा परिपक्वहोती है। यदि इतना स्वाभिमान है तो हममे क्यो नही आये? यह समझने के लिये अति सूक्ष्म बात है ? भगवान प्रत्यक्ष मिले है। इस लिये स्वाभिमान रखे। आनंद करे। यदि स्वाभिमान कम हुई तो सभी वारयस प्रभावी हो जायेगे। यह सत्य बात है। सिद्धान्त कडक रहना है। सिद्धान्त है। परम्परा है तो सब कुछ बच्चे-बच्चियों को देना है। इससे परिवार सुखी होगा।

पाला बाँधना बंद कर दे। व्यवस्था अनुरुप पाला बाँधते देखकर) हरिभक्त बहुत अच्छे है। शिक्षापत्री में महाराज ने पाला बांध रखा है। प्रसाद लेकर जाइये। दर्शन करके जाये। भगवान का होकर रहे। महाराज आप सभी को तथा आप के परिवार को अधिक सुखी रखे। ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना करते है।

श्री
स्वामिनारायण
म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची

(जुलाई-२०२४)

ता. १७-०७-२०२४ प.भ.श्री मनजी शिवजी हिराणी – ह्युस्टन

ता. २१-०७-२०२४ प.भ.श्री जनककुमार गोकलदास पटेल – लवारपुरवाला

ओगस्ट-२०२४

ता. ०७-०८-२०२४ महिला मंडल, कालुपुर मंदिर हवेली अमदावाद

ता. ११-०८-२०२४ (प्रातः) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल, साबरमती तथा माणसा

त (११ बजे) श्री नरनारायणदेव महिला मंडल – महादेवनगर-वस्त्राल

ता. १५-०८-२०२४ सत्संग समाज श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर – ह. महंत शास्त्री स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी तथा हसमुखभाई अर्जुनभाई पोरीया – हिंमतनगर.

ता. १८-०८-२०२४ महिला मंडल श्री स्वामिनारायण मंदिर बहेनोनुं – दरबारगढ – मोरबी – ह. सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा सांख्ययोगी उषाबा.

ता. १९-०८-२०२४ प.भ.श्री मीनाबेन तेजेन्द्रभाई पटेल – मोखासण-यु.एस.ए.

ता. २४-०८-२०२४ प.भ.श्री पंकजभाई कालीदासभाई पटेल – डांगरवावाला – हा. राणीप.

ता. २५-०८-२०२४ प.भ.श्री गणपतभाई गंगारामभाई पटेल – संकल्प पूरा होने के कारण– पंढरपुरवाला – मेमनगर.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची

रू।.५०,०००/- प.भ.श्री प्राणजीवनभाई – बावरवा मोरबी – प्रे. सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा सांख्ययोगी उषाबा – दरबारगढ – मोरबी

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

SWEET
SWEET

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "पापकर्म का प्रारम्भ कब होता है ?"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

आज पापमोचनी एकादशी है। पाप अर्थ क्या ? सामान्य रुप से देखे तो सभी को यह ज्ञात है । सभी खराब कर्म पाप होते है। विगतवार समझे तो यह सभी तामसी कर्म है। जो कार्य धर्म विरुद्ध किये जाते है। कुछ कार्य नीति-नियम के खिलाफ किये जाते है ।मनसा, वाचा, कर्मणा से कोई कृत्य करे । यदि इससे किसी को कष्ट मिले तो वह कार्य पाप कर्म है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि हम कोई कर्म करते है। यदि हमे यह लगे कि लोग जान जायेगे तो क्या होगा ? तो समझे वह गलत कार्य कर रहे है। कोई भी कार्य विवेक और विचार से करना चाहिए। यदि सत्कर्म है तो उसे भी सोच कर करना चाहिए । उदाहरण के लिये यदि दान करना है तो भी सुपात्र को करना चाहिए । हमे ऐसा लगता है कि पुष्य का कार्य कर रहे है । लेकिन यह पुण्य दान लेने वाले व्यक्ति के उपयोग के उपर निर्भर करता है। इस कारण से उस धन से आप भी जुडे है। यहाँ पर मात्र समझने के लिये है कि कोई तामसी व्यक्ति आप के पास से माँगकर पैसा प्राप्त कर लिया। वह हथियार खरीदकर किसी को हानि या मार डालता है। तो अन्जाने में आप भी पाप के भागी बन जाते है। क्यो कि ? ये हथियार आप के धन से खरीदा गया था। इसी प्रकार जो आप दान दे रहे है। वह व्यक्ति राजसी प्रकृति वाला होगा । तो वह धन का उपयोग अपने सुख के लिये करेगा। इसमें राजसी फल मिलेगा। इसी प्रकार सात्विक प्रकृतिवाले को दानदेगे। तो सतकर्म में दान के धन को खर्च करेगा। इसका भी फल सात्विक मिलेगा। और दान भगवद्प्राप्ति के लिये के लिये देगे तो फल भगवद् प्राप्ति होगी। जैसे वर्षा का जल होता है। वह किस पात्र में गिरता है। वैसे उसकी प्रकृति बनती है। समुद्र में गिरने से मसुद्र जैसी प्रकृति होगी । नदी में गिरेगा तो नदी जैसा होगा । गटर में गिरेगा तो गटर के पानी जैसा हो जायेगा। अर्थात् दान का फल पात्र के गुण पर निर्भर करता है। इस लिये कोई भी कार्य करने से पहले दसबार विचार करना चाहिए। पाप और पुण्य की परिभाषा परिस्थिति के अनुसार बदलती है। क्रोध करना, झूठ बोलना यह सब गलत होता है। अधिक सत्यवादी बनने पर भी झगडा हो जाता है। तो सत्य की क्या परिभाषा है ? सत्य किसे कह सकते है ? उसे भी समझना चाहिए । किसी का कुछ अहित करने के लिये बोलना 'महापाप' होता है। सत्य अप्रिय हो उसे नही बोलना चाहिए। क्रोध को देखे कई स्थान पर क्रोध करना आवश्यक हो जाता है । इसमें दोष नही लगत है । किसी का अच्छा करने के लिये क्रोध करना पडे । लेकिन यह क्रोध आप को आन्तरिकरुप से प्रभावित नही करे । सामने वाले व्यक्ति के प्रति द्वेष भाव नही रखना चाहिए। आप के अंदर धबराहट भी नही होना चाहिए । तो यह

प.पू. बहुजी महाराज के स्वागत के लिये हवेली में सजावट

क्रोध अपराध नही है। यह सामने वाले के हित के लिये कर रहे है। और आप देखे पाप कर्म का प्रारम्भ कहाँ से होता है। जब भगवान का स्मरण समाप्त होता है तो ही यह होता है। और भगवद् स्मरण कब भूल जाते है। अपने अंदर 'देहभाव' आ जाता है। उस समय 'देहाध्याय' की भावना आ जाती है। तब जगत के प्रति 'ममत्व' आ जाता है। इस कारण से अपने अंदर काम, क्रोद, मद, लोभ, मान, ईर्ष्या की बृद्धि हो जाती है। मनुष्य संसार में सुख खोजना प्रारम्भ कर देता है।उसे संतुष्टि नही होती है। मनुष्य संसार के क्षणिक सुख प्राप्ति के लिये दौडता है। सभी प्रकार की ईच्छा जागृत हो जाती है। संसार की वस्तुओ के प्रति आसक्ति बढ जाती है। इसके विपरीत यदि भगावन के चरणो से जुड जाये तो 'देहाध्यास' धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। यदि अपने से 'पापकर्म' या कोई गलत कार्य हो जाय तो ज्ञात होने पर उसे कैसे दूर कर सकते है ? तो सर्वोत्तम उपाय सच्चे दिल से पश्चाताप कर लेना होता है। सभी के बीच अपनी भूल स्वीकार कर ले तो अच्छी बात है। इसके लिये बल चाहिए। लोग के मध्य अपनी भूल स्वीकारना, अपनी भूल पर पछताना। और प्रतिज्ञा करना कि फिर से मै यह भूल नही करूँगा। सच्चे हृदय से पछताने पर प्रभु माफ कर देते है। भगवान अति दयालू है। आप का बच्चा यदि बदमाशी करता है तो उसे आप डाँटते-मारते है। लेकिन उसके प्रति द्वेष भावना नही रहती है। आप बच्चो को दण्ड देगे तो बच्चा रुदन करेगा। उससे अधिक अंदर से आप रुदन करेगे। लेकिन अच्छाई के लिये दण्ड देना पडता है। भविष्य में वह भूल करने से पहले आप के दिये हुए दण्ड को अवश्य याद करेगा। अर्थात् भूल नही करेगे। बच्चे को जितना प्रेम माँ करती है। इस संसार में कोई नही करता है। भगवानके हृ-दय में अनन्त माँ का हृदय होता है। परमात्मा का आपने प्रति 'प्रेम शुद्ध होता है।इसमें माता का भी प्रेम नही आता है। परमात्मा अपने प्रत्येक भक्त के साथ ऐसा ही प्रेम करते है। क्योकि वे ही अंश है। हम लोग अनेक हिस्से है। भगवान यदि कोई सजा देते है तो वह हमे समझाने के लिये देते है। कुछ गलत किये होगे तो हमे भागना पडता है। गलत हो जाने पर प्रायश्चित कर लेना चाहिए। फिरगलत नही करना चाहिए। इसका ध्यान रखना चाहिए। जहाँ तक हो सके भगवान सम्बन्धी क्रिया में लगे रहे। अन्तःकरण में 'मन' 'बुद्धि' चित्त और अहंकार आता है। मन का कार्य संकल्प-विकल्प करना है। मन जितना सांसारिक संकल्प-विकल्प करेगा उतना ही अशुद्ध होता जायेगा। भगवान सम्बन्धी संकल्प-विकल्प करने से शुद्धता आयेगी। बुद्धि कार्य का निर्धारण करेगी। बुद्धिजगत का निश्चय करेगी। उतनी बुद्धि पवित्र होगी। इसी प्रकार चित्त का कार्य चिंतन करना है। चित्त भगवान सम्बन्धी चिंतन करने पर शुद्ध होगा। जगत का चिंतन करने पर चित्र अशुद्ध होगा। इसी प्रकार जब 'रुप',

'धन', 'सत्ता', 'कुल', 'विद्वता' इस सब का अहम् आता है। तो अहंकार अशुद्ध होता है। मैं भगवान का दास हूँ ऐसा गुमान रहता है। तो अहंकार अशुद्ध होता है। मैं भगवान का दास हूँ ऐसा गुमान रहता है। तो अहंकार शुद्ध कहलाता है। इसी प्रकार इन्द्रियाँ भी है। इन्द्रियो को संसार के कार्य में उपयोग करेगे। तो आप को ज्ञात होगा कि हम बंधन में बंध रहे है। तृष्ण, आशा हमे संसार में फँसाती है। और हम फँसते जाते है। बंधन मजबूत होता जाता है। हमे इस बंधन को मजबूत न करके ढीला रखना है। ऐसा प्रयास करना चाहिए। पहले से से ही बंधन में है। बंधे ही है। तो बंधन से मुक्त होने के लिये मन को नियन्त्रण में रखने पर लक्ष्य तक जा सकते है। मन को नियमंत्रण रखने का कार्य यह है कि जैसे हम वाहन चलाते है। तो हमे ध्यान रखना पडता है कि कहाँ पर स्पीड कम करना है। कहाँ पर स्पीड तेज करना है। कहाँ पर ब्रेक लगना है। कहाँ पर मुडना है। यह सब ज्ञात होना चाहिए। इसी प्रकार मन के नियंत्रण के लिये संकल्प-विकल्प मन में जब आये। तब कब रुके। विचार को दूसरी दिशा दे सके। सात्विक विचार आने पर गति बढा देना चाहिए। इसके लिये प्रयास करना पडता है। किसी के कहने पर अन्य जगह पर जाने से आप अपना लक्ष्य भटक जायेगे। अपना लक्ष्य क्या है ? यह सभी को ज्ञात है। अब हमें कुछ अधिक नही बताना है। लेकिन आप सभी से ज्ञात करना है कि आप आप इतने समय से सभा में आते है। तो सभा के माध्यम से आप में क्या बदलाव आया है ? अथवा आप को लाभ मिला ? इसके बारे में बताये। आप सभी को श्री नरनारायणदेव की तरफ से चमत्कार मिला हो तो बताये। हमारे लिये सबसे बड़ा चमत्कार तो यह है कि पूरे ब्रह्मांड की इस पवित्र भूमि में अलग-अलग प्रांत से आकर लोग साथ में बैठकर सत्संग कर रहे है। मैं कहाँ से आयी। इन सांख्यबहनो का जन्मस्थल कहाँ पर है। आप सभी दूर-दूर से आये है। यह हम सब का अच्छा प्रारब्ध है। हम सभी नरनारायणदेव के चौक में एकत्र हुए है। साथ में बैठकर भजन कर रहे है। इससे विशेष 'चमत्कार' हम लोगो के लिये क्या हो सकता है।

दीपोत्सव कार्यक्रम

चोपडा खरीदने हेतु : आश्विन कृष्ण पक्ष-८ गुरुवार दि. २४-१०-२०२४ को पुष्य नक्षत्र होने से हिसाब लिखने के रजिस्टर खरीदने का मुहूर्त अच्छा है।

धनतरेस : आश्विन कृष्ण पक्ष-१३ बुधवार दि. ३०-१०-२०२४ धनतेरस महालक्ष्मी पूजन।

काली चौदश : आश्विन कृष्ण पक्ष-१४ गुरुवार दि. ३१-१०-२०२४ श्री हनुमानजी महाराज का पूजन तथा समूह शारदापूजन-चोपडा पूजन सायंकाल ७-०० बजे अमदावाद कालुपुर मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा विधिवत रुप से पूर्ण किया जायेगा।

दीपावली : आश्विन कृष्ण पक्ष-३० शुक्रवार दि. ०१-११-२०२४

नूतन वर्ष : कार्तिक शुक्ल पक्ष-१ शनिवार दि. ०२-११-२०२४

मंगला आरती प्रातः ५-00 बजे।
श्रृंगार आरती प्रातः ६-३0 बजे।
गोवर्धन पूजा प्रातः ८-00।
राजभोग आरती प्रातः १0-१0 बजे।
अन्नकूट दर्शन दोपहर १0-00 बजे से ३-३0 बजे तक।

श्रीहरि के ६ठ्ठे, ७ वें तथा ८ वें वंशज के हाथों से संपन्न होगा। नूतन वर्ष को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कालुपुर मंदिर में अपनी आफिस में सभी को दर्शन देंगे।

सूचना : समूह शारदा पूजन में लाभ लेने वाले भक्त अपनी बही लाल कलर में कपड़े में पता-फोन-मोबाईल नंबर लिखकर मंदिर की आफिस में ५००/- रुपये भरकर रसीद प्राप्त करलें।

धर्मकुल परिवार

सत्संग समाचार

विश्वका सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर गुरु पूर्णिमा महोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में अषाढ सुद-१५ गुरु पूर्णिमा महोत्सव ता. २१-७-२४ रविवार के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया।

प्रातः आठ बजे श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो कालुपुर मंदिर में पधारने पर संत-हरिभक्तोने उल्लासपूर्वक स्वागत और समैया किये थे। श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती उतारकर देव का दर्शन करके सभा में विराजमान हुए थे। विद्वान विप्रो द्वारा विधिवतरुप से स्वस्तिवाचन के बाद संतो-अग्रगण्य लोगो ने धर्मकुल की पूजा करके सामुहिक आरती किये थे। इसके पश्चात पूनम की सभा और धर्मकुल पूजन के यजमान प.भ.श्री संजयभाई पिंडोरिया और प.भ. जीतेश राधवाणी वर्त हश्री नरनारायणदेव के पूजारी आदि परिवारने धर्मकुल की पूजा आरती किये थे।

प्रसंगोचित सभा में स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर महंतश्री), स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) और स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर) अपने सभी के गुरु धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की सुंदर महिमा बताये थे।

इसके बाद प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभी संतो-हरिभक्तो आशीर्वाद दिये थे। पूरे प्रसंग का संचालन अपने प्रसिद्ध कथाकार पू. स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ने किया था। पूज्य महंत शा. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में संत मंडलने सुदंर प्रबन्ध किये थे।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और बहनो के युवती मंडलने सुंदर सेवा दीथी। आज जनमेदिनी भीड गुरु पूजन का लाभ उठाने के लिये आई थी। पूरा मंदिर का प्रांगण सभा मंडप भरा हुआ था। सभी दर्शनार्थीयो के लिये अलौकिक प्रसाद खिलाया गया था।(कोठारी स्वामी नारायणमुनिदासजी)

विश्वका सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव के पास प्रसादी के महादेव का शिवपूजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद एवम् पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में श्री नरनारायणदेव के पास विराजमान प्रसादी के महादेवजी का शिवपूजन ता. ५-८-२०२४ से ता. २-९-२०२४ तक प्रातः ७-३० से ८-३० बजे तक कई हरिभक्तोने विद्वान विप्र द्वारा शिवपूजन का महाअलौकिक लाभ लिये (को. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

विश्वका सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में श्रावण महीने मे कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद एवम् पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में पवित्र श्रावण मास में ता. ५-८-२०२४ से २-९-२४ तक दंढाव्य देश के लीला का कथा प्रात) ७ बजे से ८ के मध्य अलग-अलग वक्ता संतो के श्रीमुख से प्रसादी के सभामंडप में पूर्ण हुई। जिसमें स.गु. शास्त्री स्वामी सद्‌गुणदासजी, स.गु. शास्त्री स्वामी घनश्यामदासजी, स.गु. शास्त्री स्वामी मूर्तिजीवनदासजी और स.गु. शास्त्री स्वामी सुव्रतदासजीने दंढाव्य देश के अलौकिक कथा बताये थे। (को. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

पवित्र श्रावण मास में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा महापूजा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद एवम् पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा पवित्र श्रावण मास में श्रावण सुद-१ ता. ५-८-२०२४ से श्रावण वद-३० ता. २-९-२०२४ तक प्रातः ७ से ८ बजे बजे के मध्य महापूजा का सुंदर प्रबन्ध किया गया था। इसमें अधिक संख्या में हरिभक्त महापूजा मैं बेठने का लाभ उठाये। (को. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण कैम्प का आयोजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद एवम् पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ता. ४-८-२०२४ रविवार के दिन प्रातः रविवार को ५-३० से ७-३० बजे तक संत, सांख्ययोगी बहनो तथा हरिभक्तो के लिये निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण का अच्छा प्रबन्ध किया गया था। जिस में सेवा भावी डॉक्टरोने सभी लोगो का स्वास्थ्य परीक्षण किये। सांख्ययोगी बहनोने लाभ लिया। (को. शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद एवम् आज्ञा से पवित्र चार्तुमास में विश्व के सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा आयोजित नवनिर्मित शीलज मंदिर के लाभ हेतु श्रीमद् भागवत सप्ताह रात्रीय पारायण

ता. ७-९-२०२४ शनिवार से ता. १३-९-२०२४ शुक्रवार

कथा का समय : रात्रि ८ से ११

प्रेरक : पूज्य स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर महंतश्री)

सभा संचालन : स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी (कालुपुर)

वक्ताश्री : पू. स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल)

सहयोग : श्री स्वामिनारायण मंदिर शीलज (श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल बोडकदेव, थलतेज, शीलज, साइंससीटी) इस कथा का लाभ लेने के लिये बोडकदेव, थलतेज, शीलज, साइंससीटी के अलग-अलग के धर्मप्रेमिओ से विशेष अनुरोध है।

सत्संग परिचय का फार्म भरने के लिये और सेवा करने के लिये सम्पर्क : प.भ. हितेन्द्रभाई शीलज मो. : ९८७९८५३८१०, प.भ. धनवंतभाई - थलतेज. मो. : ९८२५०१६४५३

विश्वका सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पवित्र मास में हिंडोला उत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद एवम् पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन में विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में पवित्र श्रावण महीने में भव्य हिंडोला उत्सव का सुंदर प्रबन्ध किया गया था। अपने सुप्रसिद्ध कथाकार पू.स.गु. शास्त्री स्वामी श्री रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) और पू.स.गु. कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी के अच्छे प्रबन्ध से सेवाभावी हरिभक्तो के सहकार एवम् सेवा से सम्पन्न हुआ था।

ता. २८-७-२०२४ से २१-८-२०२४ तक इस अलौकिक हिंडोला उत्सव में झरना, पहाड, तालाब, फूल, पौधे जैसे प्राकृतिक कल्पो के साथ विविध प्रकार के कलात्मक हिंडोला का दर्शन प.पू. बड़े महाराजश्री के करकमलो द्वारा किया गया था। इसके बाद कभी-कभी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पूर्ण धर्मकुल परिवार हिंडोला उत्सव देखकर अति खुश हुए थे। प्रातः ५-३० से १२ बजे और शायं ४ से ८ के मध्य पराविस्तार एवम् गाँवो से रोज हजारो भाविक भक्त आकर हिंडोला का दर्शन किये थे। इतने बडे प्रोजेक्ट में यजमान परिवार भाग लेकर अलौककि लाभ उठाये थे।

प.भ. चंचलबा परिवार - मोखासण, प.भ. अरविंदभाई आर. दौंगा, शालीन अरविंदभाई दोंगा, कैलासबेन अरविंदभाई दोंगा, प.भ. उषाबेन मुकेशकुमार पटेल - अहमदाबाद, प.भ. शर्मिलाबेन भरतभाई चौधरी के जन्म दिनके अवसर पर, प.भ. गिरीधरलाल मोहनदास पटेल राजपुर, मौलिक - यु.एस.एस., प.भ. रणछोडभाई (भगत), विठ्ठल पटेल - कुडासणवाले गांधीनगर, प.भ. मानसी पूजन राजेन्द्रभाई पटेल - पोरवाले अमेरिका - साबरमती, प.भ. प्रविणभाई नटवरभाई पटेल, रमिलाबेन प्रवीणभाई पटेल - ह. वेदांत तथा वासवी, सेडवावाला अहमदाबद, प.भ. विष्णुभाई कालीदास पटेल - ह. डॉ. नीकी पटेल - गुलाबपुरावाले अहमदाबाद, गं.स्व. शांताबेन वेलजीभाई चौधरी - ह. नारणभाई तथा महेशभाई -- बदपुरा, प.भ. बालबाई वालजी हिराणी - बलदिया-कच्छ, अ.सौ. कांताबेन कांतिभाई चौधरी, बदपुरा, माधवाणी एम्ड सन्स - भुज, प.भ. रसिकभाई राजाभाई झवेरी - जामनगरवाले, प.भ. कमलेशभाई - बायड, प.भ. कहान जयमीन पटेल - अमेरिका - ह. नरेन्द्रभाई आर. पटेल, प.भ. शारदाबेन पटेल - ह. अल्पेशभाई - अहमदाबाद, प.भ. करशनभाई हालाई - ह. नारायणभाई।

सेवा में आयी वस्तुए : प.भ. धर्मेन्द्रभाई - बंसरी - ट्रस्ट प.भ. राजूभाई - बाकरोल - ट्रस्ट प.भ. हर्षदभाई पटेल - मोटेरा - मंडप डेकोरशन का सामान

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में

हिंडोला उत्सव

2024

कालुपुर में अभूतपूर्व हिमालय-हिंडोला के दर्शन में
श्रावण मास मे लगभग डेढ लाख हरिभक्तो ने
दर्शन का लाभ उठाया था

कालुपुर मंदिर में खारेक का अन्नकूट की आरती
उतारते प.पू. बड़े महाराजश्री

शिकागो (अमेरिका) मंदिर में अन्नकूट का दर्शन

उनावा मंदिर में गुरु पूर्णिमा का उत्सव

नैरोबी (केन्या) कथा पारायण के अवसर पर
पूजा करते और सनातन स्वामी के हाथो से रक्षा
बंधवाते प.पू. आचार्य महाराजश्री

रक्षाबंधन - प्रत्येक पूनम को अहमदाबाद मंदिर में होने वाली
सत्संग सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री

पूज्य महंत स्वामी के पार्षद मंडल में श्री हार्दिकभाई राजपुरोहित (कोठार आफिस) श्री प्रफुल खरसाणी, अभि खरसाणी, श्री भगवानभाई पी. पटेल, श्री मनुभाई दुधात श्री रमेशभाई कथीरिया, श्री हनुभाई एम. परमार, श्री प्रेमजीभाई जे. सातुनीया, श्री जकनभाई भावसार । (कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी - कालुपुर)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के समक्ष भव्य हिंडोला दर्शन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से पूज्य महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से अषाढ वद-२ से श्रावण वद-२ पूरे श्रावण मास में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के समक्ष प्रतिदिन सोना-चाँदी के कलात्मक परम्परागत हिंडोला में अनेक प्रकार के भव्य हिंडोला सजाकर झूलाकर ठाकुरजी का दर्शन करवाया गया।

पूरे महीने श्रद्धालु प्रेमी भक्तगण यजमान बनकर सेवा दिये थे। हजारो की संख्या में हिंडोला के दर्शन हेतु लोग आते थे । ऐसा भव्य कलात्मक हिंडोला की सेवा में प.भ. रणजीतसिंह दरबार, प.भ. हार्दिक राजपुरोहित, प.भ. वासुदेवभाई सोनी (हलवदवाले), बाटूकिया भाईलाल, हरेसबाई बाटूकिया, मयुर हरेशभाई (धी-कांटा)ने सेवा की थी।

हिंडोला के यजमान श्री : अषाढ वद-२ : (१) प.भ. प्रीत/रूची नंदुभाई पटेल - साबरमती, (२) प.भ. मनसुखभाई देवजी हालाई - मेघपर. अषाढ वद-३/४ : प.भ. मन अल्पेशभाई पटेल - मुबारकपुरावाला - गांधीनगर. अषाढ वद-५: प.भ. फेनील कमलेशभाई पटेल - ह. कमलेशभाई तथा संगीताबेन - चांदखेडा. अषाढ वद-६ : प.भ. गणेशभाई बेचरदास पटेल -विहारवाला - ह. दिव्य अने प्रिन्स - केनेडावाला. अषाढ वद-७ : (१) प.भ. हिराबेन परसोतमभाई पटेल - भाउपुरावाला - ह. जय, उमंग, क्रिश, कृपा, गायत्री, काव्या, जीया. (२) प.भ. आयुष संदिपभाई पटेल - अंबापुरवाला - गांधीनगर. (३) प.भ. दिपेश रामजी हालाई - रामपरवेकरा-नाईरोबी. अषाढ वद-८ : (१) प.भ. अतुलभाई वी. - पोरवाला-अमदावाद. (२) रितेषभाई वंडरा - अमदावाद. (३) प.भ. रविना उर्विश चौधरी तथा उर्विश कनुभाई चौधरी - अमेरिका. (४) प.भ. नटवरलाल गंगाराम सोनी - राणीप (प्रीति ज्वेलर्स). अषाढ वद-९ : प.भ. पटेल लालजीभाई गणेशभाई - भाउपुरावाला - ह. जयेश. अषाढ वद-१० : प.भ. शेठ रावजीभाई मणीभाई पटेल - झुंडालवाला-मोटेरा. अषाढ वद-११ (एकादशी) : (१) प.भ. महेन्द्रभाई मणीभाई पटेल - मोटेरा - मणीलाल पार्टी प्लोट. (२) अ.नि. चिमनभाई बबलदास पटेल - ह. घनश्यामभाई - ईसंडवाला-मोटेरा. अषाढ वद-१२ : (१) श्री नरनारायण महिला मंडल (हवेली-कालुपुर). (२) प.भ. निलेशभाई रफालीया. अषाढ वद-१३ : (१) प.भ. चंद्रिकाबेन जयंतीभाई पटेल -पोर - गांधीनगर. (२) प.भ. परसोतमभाई मोहनभाई पटेल - गांधीनगर. अषाढ वद-१४ : प.भ. मधुबेन महेन्द्रभाई पटेल - चांदखेडा (कालीगामवाला) - ह. सुजल अल्पेशभाई अषाढ वद-३० (अमास) : (१) प.भ. रश्मिन प्रविणभाई पटेल - माणसावाला अमेरिका - जन्मदिन निमित्ते. (२) प.भ. बीना अजयकुमार पटेल - निकोल - ह. रीतु. (३) प.भ. हितेश मनुभाई पाटडीया - अमदावाद. श्रावण सुद-१ : (१) अ.नि. सेंधालाल करशनदास पटेल - कुंडाल - हाल बोपल. (२) प.भ. चंचलबेन चंदुभाई पटेल - मोटेरा. (३) प.भ. जीतेन्द्रभाई मगनलाल चोकसी - ह. मनीषभाई, जीतेन्द्रभाई, देव मनीषभाई, लताबेन, अलकाबेन, जेनीबेन. (४) प.भ. नीतिनभाई बलदेवभाई शाह - ह. जीतेशभाई, कौशलभाई शाह - आंबावाडी. (५) प.भ. शारदाबा शेलत - ह. अस्मिताबेन के. शेलत, ह. घनश्यामभाई चावडा. श्रावण सुद-२ : (१) श्रीमती विमलाबेन डाह्याभाई पटेल परिवार - माणसावाला - ह. डाह्याभाई पटेल. (२) प.भ. घनश्यामभाई मोहनभाई पटेल. श्रावण सुद-३ : (१) नरनारायण सिरामीक - ह. मंथन राजुभाई पटेल. (२) प.भ. नरेन्द्रभाई प्राणजीवनभाई पारेख. श्रावण सुद-४ : (१) प.भ. केवलभाई अवनी मेपाणी - बलदीया - हाल सीडनी ओस्ट्रेलीया. (२) प.भ. करशनभाई कानजी राघवाणी - अमदावाद. श्रावण सुद-५ : प.भ. रामजी नाथालाल केराई - रामपरा - हाल यु.के. श्रावण सुद-६ : (१) अ.नि. चंदुभाई रामाभाई पटेल - ह. धवलभाई - मोटेरा. (२) प.भ. शिवानी भूपेन्द्रभाई प्रजापति - जन्मदिन निमित्ते - नरोडा-अमदावाद. (३) प.भ. घनश्यामभाई विरजीभाई पटेल - हिरापुरा - ह. मर्म अने रोहन. (४) प.भ. महर्थभाई प्रकाशभाई पटेल - ह. प्रकाशभाई पटेल. (५) प.भ. गांडालाल कालीदासभाई पटेल - अमदावाद. श्रावण सुद-७ : (१) प.भ. विकेश लालजी हिराणी तथा नेहा कांतिलाल खीमाणी. (२) प.भ. ईलाबेन ठक्कर -निकोल - ह. विजयभाई ठक्कर. श्रावण सुद-७ : (१) प.भ. मृणाल निरज दवे - लुणावाडावाला हाल बेंग्लोर. (२) अ.नि. ज्योतिबेन शीवाभाई पटेल (कौशलेन्द्र गार्डन झुला) - ह. अमरतभाई तथा जयंतीभाई पटेल - दिव्यांग के जन्म दिन पर. श्रावण सुद-८ : प.भ. दक्ष अमितकुमार पटेल - राणीप-अमदावाद. श्रावण

सुद-९ : (१) अ.नि. कमलाबेन गजानंदभाई जादव परिवार - ह. जादव ईन्डस्ट्रीज. (२) प.भ. आनंद अशोकभाई देसाई, अश्विन अंबालाल महेता, अशोक, निकीता, पुनिता, चिराग, निष्मा, रिमा, निलेश. (३) प.भ. विनोदभाई एस. पटेल परिवार - ह. मीहीर, गौरव, धृव, शिव, श्रीया पटेल परिवार - ह. कारभारी साहेब. (४) प.भ. धर्मेन्द्रभाई घनश्यामभाई पटेल - ह. सचिन, विरल, रियांश. (५) प.भ. रतीभाई केशवलाल पटेल, दक्षाबेन ठाकोरभाई पटेल, गीराबेन पटेल तथा अंजनाबेन - कालीगाम. (६) महिला मंडल - हवेली कालुपुर. (७) प.भ. लालजीभाई हरीभाई टांकेचा. श्रावण सुद-१० : (१) प.भ. हर्षद एम. पटेल (वकील) - हिंमतनगर. (२) प.भ. पटेल हेतलबेन योगेशकुमार - डांगरवा हाल अमेरिका - ह. निकी. श्रावण सुद-११ (एकादशी) : (१) प.भ. दिपकभाई प्रविणभाई पाटडीया - ह. पृथ्वी अने मेहुल - गांधीनगर हाल बेहरीन. (२) अ.नि. अमृतबेन तुलशीभाई सापरीया - ह. मनसुखभाई तुलसीभाई सापरीया परिवार - धूलकोट हाल सुरत. (३) अ.नि. आशिषभाई जयंतीभाई पटेल - ह. निलेशभाई पटेल - चांदखेडा. (४) अ.नि. घनश्यामभाई जी. पटेल - राज तेजसभाई. (५) प.भ. दिव्यकांतभाई चिमनभाई पटेल - नार. श्रावण सुद-१२/१३ : (१) अ.नि. चंद्रकांतभाई केशवलाल महेता, अ.नि. चंद्रिकाबेन चंद्रकांतभाई महेता - ह. तरलिकाबेन केशवलाल महेता. (२) अ.नि. वल्लभभाई पोपटभाई खीचडीया - बापुनगर. (३) प.भ. धनुष जीतेन्द्रभाई - राधनपुर. (४) प.भ. ईन्दुबेन रवजीभाई पटेल, गीताबेन बकुलेश पटेल - केनेडा (जे.पी. स्वामी). (५) प.भ. धार्मिक हितेषभाई पटेल - पोर. (६) प.भ. अमरकुमार विष्णुप्रसाद पटेल. श्रावण सुद-१४ : (१) प.भ. हर्षाबेन अतुलकुमार भावसार - बकरी पोल कालुपुर. (२) प.भ. रूद्र पटेल - राणीप. (३) प.भ. भुपेन्द्रभाई प्रभुदासभाई पटेल - हे. केनोपभाई. श्रावण सुद-१५ (पूनम-रक्षाबंधन) : (१) प.भ. मनजीभाई विश्रामभाई वरसाणी, धर्मपत्नी केशरबाई, पुत्र नारायणभाई तथा धनजीभाई तथा कान्तिभाई परिवार मूल गाम बलदिया - हाल सीडनी ओस्ट्रेलीया. (२) प.भ. जीगर पटेल तथा उर्विश पटेल - पिताश्रीना जन्म दिन पर. (३) प.भ. अनाया अंकितकुमार पटेल - पोरवाला - साबरमती. श्रावण वद-१ : (१) प.भ. भरतभाई गांडाभाई पटेल - सोलावाला-अमदावाद. (२) अ.नि. गीताबेन राजेन्द्रकुमार भावसार. श्रावण वद-२ : (१) प.भ. रिदीत रविकुमार पटेल - गांधीनगर-उनावा -ह. नयनाबेन सुमनभाई पटेल रिदीतना जन्म दिवस पर. (२) प.भ. कुसुमबेन हर्षदभाई शाह परिवार - ह. ब्र. स्वामी घनश्यामानंदजी ।

पूज्य लालजी महाराजश्री के विवाह के निमित्त नारणपुरा (कडडी) गाँव में वृक्षारोपण

श्री नरनारायणदेव देश के नारणपुरा (कडी) गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद तथा अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और महिला मंडल प.पू. लालजी महाराजश्री के विवाह की खुशी में २५१ पेडो का रोपण किया गया । पर्यावरण के लिये एक सुंदर उदाहरण दिया गया । प्रत्येक गाँव में इस तरह की प्रवृत्ति की प्रेरणा है । (नारणपुरा समग्र सत्संग और युवक मंडल)

नवा वाडज श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के विवाह के निमित्त श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज में ता. ९, १०, ११ जूलाई को तीन दिन के लिये लग्नगीत रास, गरबा, तथा नंद संतो द्वारा रहित लग्नगीत के क्रम में कीर्तन-भक्ति तथा धुन का आयोजन करके विवाह के उत्सव को मनाया गया था । प.भ. राजूभाई रसिकभाई, कमलेशभाई, मुकेशभाई, जगतसिंह तथा भरतभाई पंचाल आदि भक्त यजमान पद से लाभ लिये थे । (निलेश गज्जर - कोठारी नवा वाडज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीनगर रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में की गई प्रवृत्ति

एज्युकेशन किट का वितरण : श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ द्वारा गांधीनगर के पास गाँव के स्कूलो में छात्रो को शैक्षणिक किट, जिस में फुलस्केप कापी, रबर, पेन्सिल, को बाँटी गयी थी । से-२ मंदिर के महंत स्वामी पूज्य व्रजभूषणदासजी स्वयं गाँवो में जाकर किट का वितरण किये थे ।

सत्संग सभा-६ : ता. २८-६-२०२४ शुक्रवार को उवारसद गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में समस्त सत्संग समाज के यजमान पद पर सत्संग सभा का प्रबन्ध रात्रि ९ बजे से १०-३० तक किया गया था । श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद के संत सभा में पधारकर सत्संग, कीर्तन भक्ति का लाभ दिये थे । आज की सभा में हरिभक्त भक्ति भाव से हिस्सा लिये थे ।

रक्तदान कैम्प : श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ औररेडस्कास सोसायटी सिविल अस्पताल गांधीगनर के सहयोग से ता. ७-७-२४ रविवार के दिन प्रातः ९ से १२ बजे तक रक्तदान कैम्प भक्ति माता भवन में आयोजित किया गया था । इस कैम्प में लगभग ४२ हरिभक्तोने रक्तदान करके धन्यता का अनुभव किये ।

स्वास्थ्य परीक्षण कैम्प : श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ गांधीनगर और डॉ.लाल पैथोलाजीलैब, अहमदाबाद के सहयोग से ता. ७-७-२४ रविवार के दिन प्रात) ९ से १२ बजे तक स्वास्थ्य परीक्षण शिबिर का प्रबन्ध किया गया था । जो भक्ति माता भवन में किया गया था । इस कैम्प में लगभग १०० हरिभक्तोने लाभ उठाया था ।

सत्संग सभा-१ : ता. ११-७-२०२४ गुरुवार के दिन अंबापुर गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर में समस्त सत्संग समाज के यजमान पद से सत्संग सभा का आयोजन रात्रि ९ से १०-३० तक किया गया था । अहमदाबाद के संत सभा में पधारकर सत्संग, कीर्तन, भक्ति का लाभ दिय थे । आज की सभा में अधिक संख्या में हरिभक्तोने भक्तिभाव से सत्संग का लाभ उठाये थे ।

फ्री चैक अप कैम्प : श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ और पंचशील अस्पताल साबरमती के सहयोग से ता. १४-७-२०२४ रविवार के दिन प्रात ९ बजे से १२ बजे तक नि:शुल्क चेक अप कैम्प भक्तिमाता भवनमें किया गया था । इस कैम्प में लगभग १५० हरिभक्तोने लाभ लिया । इस कैम्प में डॉ. ममताबेन शाह और डॉ. सौम्य शाह उत्तम सेवा दिये थे ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२, गांधीनगर के रजत जयंती महोत्सव के अर्न्तगत अनेक क्रिया-कलाप में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी पूज्य पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी और सेक्टर-२ मंदिर के महंत स्वामी व्रजभूषणदासजी स्वामी अधिक कष्ट सहके इसका मार्गदर्शन दिये थे । सिनीयर सीटीजन मंडल, युवक मंडल और महिला मंडल के सभा सदस्य तन, मन, धन एवम् उत्साहपूर्वक सेवा दिये ।(बिपिन पटेल)

श्रीनरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से वडु स्वामिनारायण मंदिर के रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित प्रवृत्ति

सर्वरोज निदान कैम्प करना : वडु नरनारायणदेव सत्संग समाज वाडी में सर्व निदान रोग कैम्प किया गया था । जिस में कलोल स्थित कालेज आफ मेडिसिन एम्ड रीसर्च और आदर्श मल्टी स्पेशियलिटि अस्पताल के डॉक्टर हाजिर थे । इस कैम्प से जरुरतमंदो को सलाह दिया गया । तथा गाँव के लोग आये थे ।

किट वितरण और नेत्रदान कैम्प : दिव्यांग भाईयो तथा निराधार विधवा बहनो को वडनगर स्वामिनारायण मंदिर के महंत श्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी के हाथो द्वारा राशन किट वितरण का कार्यक्रम रखा गया था । पटेल वाडी में नेत्र रोग निदान कैम्प रखा गया था । अधिक संख्या में ग्रामीणोने भाग लिया था । आँखो की दवा तथा चश्मा नि:शुल्क दिया गया था । तथा मोतिया बंद की शल्य क्रिया भी की गयी थी ।

बैग और चोपडा वितरण : यहाँ के हाईस्कूल के हाल में दीप प्रगट करके कार्यक्रम शुरु किया गया था । जिस में विद्यार्थीयो को इनाम, बैग, चोपडा वितरण का कार्यक्रम रखा गया था । इस अवसर पर दाता, संत, अग्रणी, मेहमान विद्यालय के आचार्य, शिक्षकगण तता छात्र उपस्थित रहे थे ।

प्रवेशोत्सव मनाना : श्री नरनारायणदेव समाज के वाडी में कक्षा १ और बालवाटिका में बच्चो का प्रवेश किया गया । बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये थे । दाताओ द्वारा बैग, चोपडा, शैक्षणिक किट दिये थे । तेजस्वी बच्चो को इनाम दिया गया था । तथा नारायणवल्लभदासजी के हाथो द्वारा वृक्षारोपण किया गया ।

प्राथमिक विद्यालय में प्रवेशोत्सव : यहाँ की प्राथमिक विद्यालय में दाताओ द्वारा बच्चो को चोपडा, स्कूलबैग, तथा शैक्षणिक किट दिया गया था । तेजस्वी बच्चो को ईनाम दिया गया था ।(जयंतीभाई पटेल - वडु)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेरानी मुवाडी (कोठंबा) का १४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम के महंत) की प्रेरणा से मेरा के मुवाडी गाँव में समस्त सत्संग समाज के अच्छे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर का १४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव धुमधाम से मनाया गया था । इस अवसर पर जेतलपुर मंदिर से जनमंगल स्वामी, अक्षरप्रियदासजी स्वामी और मुकुल भगतजी पधारकर कथावार्ता भक्तिका लाभ दिये थे । (जनमंगल स्वामी - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महिज का ४७ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम के महंतश्री) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर महिज के ४७ वे वार्षिक पाटोत्सव ज्येष्ठ वद-३ ता. २४-६-२०२४ के दिन पूरे गाँव के सत्संगिओने अच्छा प्रबन्ध किये थे । इस अवसर पर जेतलपुर से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी स.गु. ब्र. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी (कालुपुर ट्रस्टीश्री) जनमंगल स्वामी, अक्षरप्रियदासजी स्वामी, हेमंत भगत भूदेव आदि संत

मंडल पधारकर कथा-वार्ता का लाभ दिये थे । पाटोत्सव के यजमान पद का लाभ प.भ. पलखभाई परिवार ने लिया । (जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जरवला का ७४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा से मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर जरवला का ७४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ज्येष्ठ सुद-५ ता. ११-६-२०२४ के दिन पूरे गाँव के हरिभक्त अच्छा प्रबन्ध करके मनाये थे ।

इस अवसर पर जेतलपुर मंदिर के जनमंगल स्वामी पार्षद हेमंत भगत (भूदेव) आदि संत पार्षद मंडल ने हरिभक्तो को कथा-वार्ता के माध्यम से सुंदर लाभ दिये । (जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा गाम (ता. कपडवंज) १४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा मार्गदर्शनसे श्री स्वामिनारायण मंदिर नवागाम (कपडवंज) का १४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव वैशाख वद-५ के दिन पूरे गाँव के हरिभक्त मनाये थे । इस अवसर पर जेतलपुर मंदि के महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी तथा स्वा. जनमंगदासजी संत पधारे थे । तथा कथा-वार्ता का लाभ दिये थे ।(जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवागाम (दशक्रोई) ३१ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर नवागाम (दशक्रोई) का ३१ वाँ वार्षिक पाटोत्सव गाँव के सभी हरिभक्तो ने धुमधाम से मनाया था । इस अवसर पर जेतलपुरदाम से पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी स्वामी संत मंडल के साथ पधारकर कथा-वार्ता करके हरिभक्तो को खुश किये ।(जनमंगल स्वामी - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर खुशेला प्रथम वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) धाम की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर खुशेला का प्रथम वार्षिक पाटोत्सव समस्त गाँव के हरिभक्तो द्वारा उल्लास पूर्वक मनाय गया था । इस अवसर पर स.गु. ब्र. स्वा. हरिस्वरुपानंदजी (कालुपुर मंदिर के ट्रस्टीश्री), स.गु. ब्र. स्वा. कृष्णप्रियानंदजी (कांकरिया), स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम), स.गु. स्वामी भक्तिचरणदासजी आदि संत मंडल पधारकर कथा-वार्ता करके ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारे थे । (जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर राबडीया का १३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से राबडिया के समस्त सत्संग समाज और कोठारीश्रीने अच्छा प्रबन्ध किये थे । श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाईयोका) १३ वाँ वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाये गया था । इस अवसर पर जेतलपुर मंदिर से जनमंगल स्वामी, अक्षरप्रियदासजी स्वामी और पार्षद हेमंत भगत आदि संत मंडल के साथ कथावार्ता का अच्छा लाभ दिये थे । (जनमंगल स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच द्वारा रथयात्रा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से एप्रोच मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी एवम् श्रीनरनारायणदेव युवक मंडल के सुंदर सहकार से ता. ७-७-२०२४ अषाढ सुद-२ रथयात्रा के पवित्र दिन पर सर्व प्रथम रथयात्रा का भव्य प्रबन्ध किया गया था।

संत हरिभक्तो के साथ भगवान जगन्नाथजी की रथयात्रा ३ घंटे तक बापुनगर विस्तार में धूमा था । सभी दर्शनार्थी को प्रसाद दिया गया था।

परमपूज्य लालजी महाराजश्री के विवाह उत्सव के अवसर पर एप्रोच मंदिर और हर्षद कोलोनी मंदिर में प्रतिदिन एक घंटा नंद संतो के कीर्तन बहनोने समूह में गाये थे। रासोत्सव भी किया गया था।(गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा

अषाढी तोल : स.गु. श्री गोपाालनंद स्वामी के जन्मभूमि श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडाधाम के आँगन में श्री गोपाललालजी हरिकृष्ण महाराज तथा स.गु. श्री गोपालानंद स्वामी के सानिध्य में टोरडा मंदिर के महंत स्वामी तथा टोरडा के आसपास के कृषक, नौकरी वाले लौग प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी अषाढी तोला गया था।

वर्षो से चली आ रही ऐतिहासिक परम्परानुसार अषाढ के पूर्णिमा की रात्रि में ११ बजे अनाज के ५-५ ग्राम भाग लेकर भगवान के वस्त्रो में बाँधकर एक मटकी में रखकर माताजी की साडी से मटकी का मुख बंद कर भगवान के समक्ष रख देते है। दूसरे दिन अषाढ वद एकम को उस अनाज को तौला जाता है। अनाज के घट-बढ को बाजरी के कण से संतुलित करते है। जो फसल कम पैदा होगी। वह घट जाती है। जो अधिक वह अधिक हो जाती है।

(१) गेहूँ : बाजरे के छ कण अधिक (२) मक्का : बाजरे के १२ कण अधिक (३) धान : बराबर (४) कपास : बाजरी के ६ कण अधिक (५) बाजरा : बराबर (६) चना : बराबर (७) मूँग : बाजरे के तीन दाने अधिक (८) ऊर्द : बाजरे का ७ कण अधिक (९) रसकस : बाजरे का २९ दाना अधिक (१०) काली मिट्टी : बारे के तीन दाने कम - पशु पक्षी (११) लाल मिट्टी : बाजरे के सात दाने कम मनुष्य के लिये।

विशेष : सामान्यत : वर्ष अच्छा रहेगा। बाद में वर्षा होगी। पशु, पक्षी, मानव में रोग पैदा होगे। (महंत स्वामी टोरडा मंदिर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगध्रा का १६० वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. महंत शास्त्री स्वामी भक्तिहरिदासजी (रणजीतगढ) की प्रेरणा से प.पू. आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्रस्थापित श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगध्रा का १६० वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.भ. सोनी मयूरभाई दिनकरभाई, प.भ. दलवाणी नंदलाल ठाकरसीभाईने यजमान पद पर लाभ उठाये थे। ता. १०-७-२०२४ से १४-७-२४ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पाँच दिन की कथा शा. स्वा. मंत्रप्रकाशदासजी (रणजीतगढ) के वक्ता पद से हुई। सभा का संचालन कोठारी स्वामी हरिनंदनदासने किया था। महाप्रसाद के यजमान प.भ. जसुभा झाला तथा प्रवीणभाई पटेल थे। (प्रति. अनि दूधरेजिया - धांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर हंसविल-अलाबामा (अमेरिका)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हंसविल - अलाबामा (अमरिका), प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से ता. १-१-२०२४ से ता. ७-७-२०२४ तक भव्य पंचम वार्षिक पाटोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पूजारी स.गु. ब्र. स्वामी पूर्णानंदजी पधारकर आशीर्वाद एवम् मार्गदर्शन दिये थए। सात दिन का श्रीमद् भागवत कथा पारायण का रसपान शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी (शिकागो) ने किया था। हंसविल मंदिर के महंत स.गु. जगतप्रकाशदासजी तथा स.गु. ब्र. स्वामी पविव्रानंदजी मेहनत करके हरिभक्तो के सहयोग से उत्सव किये थे। इस अवसर पर श्रीकृष्ण जन्मोत्सव रुक्मणी विवाह, श्रीहरि यज्ञ, समूह महापूजा, रासोत्सव, बच्चे-बच्चियो के सांस्कृतिक कार्यक्रम, आतिशबाजी की गयी थी। (कोठारी हंसविल - अलाबामा मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो (अमेरिका)

आराध्येदव भगवान श्री स्वामिनारायण और परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो-अमेरिका के २६वे पाटोत्सव ता. २७-७-२०२४ से ४-८-२०२४ तक उल्लासपूर्वक मनाया गया। नव दिन का श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा पारायण का रसपान शास्त्री स्वामी धर्मनंदनदासजीने किया था। स.गु. शांतिप्रकाशदासजी स्वामी की प्रेरणा और हरिभक्तो के सहयोग से भव्य पाटोत्सव मनाया गया। पाटोत्सव के समाप्ति पर प.पू. बड़े महाराजश्री ने फोन द्वारा आशीर्वाद प्रदान किये। स.गु. धर्मवल्लभदासजी स्वामी आदि कई संतो ने पधारकर आशीर्वाद प्रदान किये। पूरे पाटोत्सव में श्री घनश्याम जन्मोत्सव, गद्दी पट्टाभिषेक, रासोत्सव, फूलदोत्सव, श्रीहरि यज्ञ ठाकुरजी का दिव्य अभिषेक और अन्नकूट आदि किया गया था। (कोठारीश्री शिकागो मंदिर)

अषाढ सुद-१५ (पूनम) धर्मकुल गुरु पूजन के यशस्वी यजमानश्री

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के खुशी के लिये तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा धर्मकुल के खुशी के लिये अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से गुरु पूर्णिमा धर्मकुल गुरु पूजन के यशस्वी यजमान (१) प.भ. प्रवीणभाई नटवरभाई पटेल, अ.सौ. रमीलाबेन प्रवीणभाई पटेल (सेडवाले-न्यु राणीप) - ह. वेदांत वाशवी (२) प.भ. परसोतमभाई त्रिभोवनदास पटेल (भाउपुरावाले), हिराबेन परसोतमभाई पटेल, ह. श्री कल्पेशभाई (के.पी.) पटेल, श्री घनश्यामभाई और पिन्टुभाई पौत्र जय, उमंग, क्रिश।

श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडाधाम के नये महंतश्री

मू.अ.मू.स.गु. श्री गोपालानंद स्वामी के जन्मस्थान श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा के नये महंत स्वामी स.गु. स्वामी सिद्धेश्वरदासजी गुरु स्वामी लक्ष्मीप्रसाददासजी (ईडर मंदिर महंतश्री) को नियुक्त किया गया है। (संपर्क : ९७२७८८८१९९, ९६८७४६५८४१, ८४८७०६९०१९

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा के नये महंतश्री

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेहसाणा के नये महंत स्वामी स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी गुरु सगु. शा. स्वामी आत्मप्रकासदासजी (मथुरा) मंदिर के महंतश्री को नियुक्त किया गया हा। (संपर्क : ७०४१९९२२४५)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्रावण सुद पूनम (रक्षाबंधन) सत्संग सभा के यजमानश्री

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पूज्य महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्रावण सुद-१५ ता. १९-८-२०२४ को ठाकुरजी का थाल, सत्संग सभा, सतंवर्णी पार्षद, हरिभक्त के रसोई के यजमान प.भ. श्री संजयभाई पिंडोरिया और प.भ. जीतेश राधवाणी - ह. श्री नरनारायणधेव के पूजारी। वक्ता पू. क.गु. शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी (महंतश्री एप्रोच मंदिर)

समप्रदाय के गौरव

अपने नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावान प.भ. अशोकभाई दवे (निवृत्त न्यायाधीश गुजरात हाईकोर्ट) (एडवोकेट) के सुपुत्र प.भ. हार्दिकभाई की गर्वन्मेन्ट प्लीडर आफिस में (पी.पी.) पब्लिक प्रोसीक्यूटर के रुप में प्रदेश के कानून विभाग में नियुक्ति मिली है। प.पू. आचार्य महाराजश्री और पूरे धर्मकुल उनके उत्तरोत्तर प्रगति के लिये श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना करते है।

अपने छोटे-बड़े मंदिरो में कथा-वार्ता के लिये आनेवाले संत हरिभक्तो के लिये सूचना

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञानुसार अपने नरनारायणदेव देश के शिखरबद्ध हरि मंदिरो में अनपे संतो द्वारा कथा-वार्ता महापूजा तथा अन्य प्रासंगिक उत्सव हरिभक्तो के संकल्प के द्वारा किया ही जाता है। इतना प्रत्येक हरिभक्तो को ध्यान देना है कि अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री के आज्ञानुसार अपने बताये गये कार्यक्रम अवसर मनाने के लिये हरिभक्त पालन करे। यह अपना कर्तव्य है। (आज्ञा से)

श्री नरनारायणदेव देश के मंदिरो में दान-धर्मादा (पदार्थ-वस्तु) देने वाले हरिभक्त चेक, ड्राफ्ट देने के लिये प्रेरित हो। यह विशेष सूचना है

इस प्रकार श्री नरनारायणदेव देश के सभी हरिभक्तो से नम्र सूचना है कि आप श्री नरनारायणदेव के शिखरबद्ध और हरिमंदिरो में जो कोई हरिभक्त दान, धर्मादा करे तो चेक ड्राफ्ट से करे। यह अवश्य ध्यान दे। चेक की रसीद अवश्य प्राप्त करे। ठाकुरजी के लिये गहने या कोई वस्तु देने पर धर्मादा रसीद अवश्य प्राप्त करे। यह मंदिर के कोठार से अवश्य ले। (आज्ञा से)

संवत २०८०-८१ के वर्ष मे (वर्षाकाल) गाँव में गये कथा करने वाले संतो की सूची

देश का नाम	मंडलधारीनुं नाम
अमदावाद शहेर चोर्यासी	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी व्रजभूषणदासजी (गांधीनगर से-२) गुरु स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरूषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर)
कणभा	स.गु. शास्त्री स्वामी घनश्यामदासजी गुरु स.गु. स्वामी केशवचरणदासजी (कालुपुर)
बालासिनोर	स.गु. शास्त्री स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी (कालुपुर)
आंतरोली	स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरूपदासजी गुरु स.गु. स्वामी जानकीवल्लभदासजी (पोरडा)
लुणावाडा	स.गु. स्वामी नारायणमुनिदासजी गुरु स.गु. स्वामी मुकुन्दजीवनदासजी
मारूसणा-कटोसणा	स.गु. स्वामी अजयप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (धोलका)
ट्रेन्ट सीतापुर	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी नरनारायणदासजी (जेतलपुर)
विसनगर	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी नारणवल्लभदासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिसेवादासजी (वडनगर)
कपडवंज	स.गु. शास्त्री स्वामी घनश्यामदासजी गुरु स.गु. स्वामी केशवचरणदासजी (कालुपुर)
विहार-गेरीता	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी (सिध्धपुर)
वडुं-डांगरवा	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी गुरुप्रसाददासजी (कलोल)
बालवा	स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी गुरु स.गु. महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (उनावा)
भात-कासीन्द्रा	स.गु. स्वामी श्रीरंगदासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिनारायणदासजी (कालुपुर)
विरमगाम	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी नरनारायणदासजी (जेतलपुर)
लांघणज	स.गु. स्वामी नंदकिशोरदासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिनारायणदासजी
मोरवासण	स.गु. शा. स्वामी गुरुप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी हरिगोविंददासजी (कलोल)
उंझा	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी (सिध्धपुर)
बनासकांठा	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (कोटा)
पोर-वावोल	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट) गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी पुरूषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर)
धमासणा	स.गु. स्वामी आनंदस्वरूपदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी (पोरडा)
प्रांतिज-मोडासा	स.गु. महंत स्वामी प्राणजीवनदासजी गुरु स.गु. स्वामी नरनारायणदासजी (प्रांतिज)
साणंद-गोधावी	स.गु. शास्त्री स्वामी ध्यानप्रियदासजी (बोपल)
शिरोही	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी (सिध्धपुर)
सादरा-वासणा	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी (बापुनगर)
कुडाल-राजपुर	स.गु. स्वामी सद्‌गुणदासजी (मोरबी पूर्व महंतश्री)
संतरामपुर	स.गु. महंत शास्त्री स्वामी वासुदेवचरणदासजी गुरु स.गु. स्वामी जानकीवल्लभदासजी (पोरडा)
नलकंठा	स.गु. स्वामी धर्मकिशोरदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी जगतप्रकाशदासजी
खाखरीया	स.गु. स्वामी बालकृष्णदासजी गुरु स.गु. स्वामी श्रीहरीदासजी

नोंध : जिस देश में कोई नया गाँव का नाम जोडना हो तो बालु स्वामी का संपर्क करे ।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

भारतीय क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष श्री जय शाह
प.पू. लालजी महाराजश्री को शुभेच्छा व्यक्त करते हुए ।

-वैष्णव आचार्यश्री प.पू. लालजी महाराजश्री को शुभेच्छा देते हुए साथ में धर्मकुल ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

हम सभी के प्रिय भविष्य के आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के विवाह अवसर पर भारत सरकार के गृहमंत्री माननीय श्री अमितभाई शाह आचार्य महाराजश्री के निवास स्थान पर शुभेच्छा देते हुए।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के

52 वे प्राकट्योत्सव

आश्विन सुद-१० विजया दशमी ता. १३-१०-२०२४ रविवार
अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा
भविष्य के आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के सानिध्य में

शरदोत्सव

आश्विन सुद-१४ (शरद पूनम)
ता. १६-१०-२०२४ बुधवार को
कीर्तन, भक्ति और रास गरबा,
समय रात्रि ८-३० बजे से

Praful Kharsani